8-5/CSU/Acd./BOS/2022/160

**केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय**

**जनकपुरी नई दिल्ली**

दिनांक : 01.05.2024

**सूचना**

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के साहित्य विद्याशाखा का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम एक विद्वत्समिति द्वारा परिशीलित करते हुए संशोधित पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के सभी अध्यापको/छात्रों एवं अन्य विद्वानों हेतु इस पाठ्यक्रम का प्रारूप संलग्न है। सभी अध्यापको/छात्रों एवं अन्य विद्वानों से अनुरोध है कि उक्त पाठ्यक्रम पर अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी आदि (यदि कोई है तो) दिनांक 07.05.2024 सायं 05:00 बजे तक अधोहस्ताक्षरी को उपलब्ध कराने का कष्ट करें।

B. Biswal 01/05/2024

**(प्रो. बनमाली बिस्वाल)**

अधिष्ठाता (शै.)

# दशदिवसीय सम्पूर्णसाहित्य पाठ्यक्रम पुनर्निर्माण कार्यशाला ( 21-30.11.2023 )

## का कार्यवृत्त

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय के पत्रांक F.N.08-05 /CSU/Acd./BOS/2022/1237, दिनाङ्क-26.10.2023 के अनुसार सम्पूर्णसाहित्य पाठ्यक्रम पुनर्निर्माण कार्यशाला का आयोजन दिनाङ्क 21.11.2023 से 30.11.2023 तक श्रीरघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग में किया गया। इस कार्यशाला में शास्त्री सामान्य, शास्त्री प्रतिष्ठा, शास्त्री शोधप्रतिष्ठा एवं आचार्य प्रथम (सामान्य), आचार्य द्वितीय (नाट्यवर्ग, काव्यवर्ग एवं अलङ्कारवर्ग) के पाठ्यक्रमों का पुनर्निर्माण राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर किया गया। पुनर्निर्मित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्न प्रकार है-

| | |
|---|---|
| 1. शास्त्री (1-3 वर्ष) | DSCC 1-15 |
| 2. शास्त्री (1-3 वर्ष) | DSE 1-3 |
| 3. शास्त्री (1-3 वर्ष) | GE-1-6 |
| 4. शास्त्री प्रतिष्ठा (चतुर्थवर्ष ) | DSCC 16-23 |
| 5. शास्त्री शोधप्रतिष्ठा (चतुर्थवर्ष ) | DSCC 16-22 |
| 6. आचार्य प्रथमवर्ष (सामान्य) | DSCC 16-23 |
| 7. आचार्य द्वितीय वर्ष (अलङ्कारवर्ग) | DSCC-24-30 |
| 8. आचार्य द्वितीय वर्ष (काव्यवर्ग) | DSCC - 24-30 |
| 9. आचार्य द्वितीय वर्ष (नाट्यवर्ग) | DSCC - 24-30 |
| 10. शोध अथवा पाण्डुलिपि-विज्ञान | 1/1 |

इस कार्यशाला में निम्नलिखित विद्वानों ने अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की -

- प्रो. श्रीनिवास वरखेडी — के. सं. वि. मुख्यालय नई दिल्ली (विशेष ऑनलईन बैठक,21.11.2023-29.11.2023)
- प्रो. सर्वनारायण झा — के. सं. वि. लखनऊ परिसर (विशेष ऑनलाईन बैठक,21.11.2023-29.11.2023)
- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय — के. सं. वि. भोपाल परिसर (विशेष ऑनलाईन बैठक,21.11.2023-29.11.2023)

- प्रो. बनमाली बिश्वाल — के. सं. वि. मुख्यालय नई दिल्ली (विशेष ऑनलईन बैठक 21.11.2023 एवं ऑफलाईन 27-30.11.2023)
- प्रो. सूर्यमणिरथ (सेवानिवृत्ताचार्य) — के. सं. वि. श्रीसदाशिव परिसर (21.11.2023 – 30.11.2023)
- प्रो. विजयपालशास्त्री — के. सं. वि. देवप्रयाग परिसर (21.11.2023 – 24.11.2023)
- प्रो. रामकुमार शर्मा — के. सं. वि. जयपुर परिसर (21.11.2023 – 30.11.2023)
- प्रो. ई. आर. नारायणन् — के. सं. वि. गुरुवायूर परिसर (21.11.2023 – 30.11.2023)
- प्रो. राघवेन्द्र भट्ट — के. सं. वि. श्रीराजीवगाँधी परिसर (21.11.2023 – 30.11.2023)
- प्रो. ओमनाथ बिमली — दिल्ली विश्वविद्यालय (26.11.2023 – 29.11.2023)
- प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय — दिल्ली विश्वविद्यालय (26.11.2023 – 29.11.2023)

इसके अतिरिक्त-

- 21.11.2023 को सम्पन्न उद्घाटन सत्र में परिसर के निदेशक प्रो. पी. वी. बी.सुब्रह्मण्यम् उपस्थित रहते हुए सभी विद्वानों/अतिथियों का स्वागत किया।
- 24.11.2023 को 2 बजे से 6 बजे तक सभी परिसरों के साहित्यप्राध्यापकों से फीडबैक लेने हेतु 4 गणों में ऑनलाइन बैठक की गई।
- दिनांक-29-11-2023 में सम्पन्न विशेष बैठक में परिसरीय सभी साहित्य विद्याशाखाओं के संयोजक भी उपस्थित रहे।
- 30.11.2023 को सांयंकाल इस कार्यशाला का सफल उपसंहार किया गया जिसमें परिसर के कार्यवाहक निदेशक डॉ. चन्द्रकला आर. कोण्डी तथा अन्य साहित्य एवं अन्य विभागों के प्राध्यापक भी विद्यमान थे । अन्त में संयोजक डॉ. अनिल कुमार द्वारा सभी विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

B. Biswal 30/11/2023
प्रो. बनमाली विश्वाल
(अधिष्ठाता, शैक्षिकवृत्तम्)

डॉ. अनिल कुमार 30.11.23
(संयोजक)

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
सम्पूर्णसाहित्यपाठ्यक्रमः
(शास्त्री-3,शास्त्रिप्रतिष्ठा3+1, शास्त्रिशोधप्रतिष्ठा 3+1)

| क्रमसं. | कक्षा/वर्ष/सत्रार्धः | पत्रनाम | पाठ्यक्रमः |
|---|---|---|---|
| 1 | शास्त्री/प्रथम/प्रथम | DSCC-1 | साहित्यशास्त्रस्य परिचयः |
| | | DSCC-2 | शिशुपालवधमहाकाव्ये वर्णिता राजनीतिः<br>(शिशुपालवधम् (२ सर्गः) |
| | | DSE-1 | रघोः पराक्रमः कौत्सस्य गुरुदक्षिणा च<br>(रघुवंशमहाकाव्यस्य चतुर्थपञ्चमसर्गौ) |
| | | GE-1 | रामस्य राजधर्मनिर्वाहः<br>(रघुवंशम् १३, १४ सर्गौ) |
| 2 | शास्त्री/प्रथमम्/द्वितीय | DSCC-3 | शतककाव्येषु नीतिशतकम् |
| | | DSCC-4 | मेघदूते वर्णितानि भौगोलिकक्षेत्राणि |
| | | DSCC-5 | प्रमुखाणि छन्दांसि कविशिक्षा च<br>(छन्दोमञ्जरी, काव्यमीमांसा) |
| | | GE-2 | अलङ्काराः (जयदेवमतानुसारेण)<br>(चन्द्रालोकः – पञ्चममयूखः) |
| 3 | शास्त्री/द्वितीयम्/तृतीय | DSCC-6 | यौवनसमयोचितः उपदेशः(शुकनासोपदेशानुसारेण)<br>(कादम्बरी-शुकनासोपदेशः) |
| | | DSCC-7 | शकुन्तलादुष्यन्तयोः गान्धर्वविवाहः<br>(रूपकपरम्परा, अभिज्ञानशाकुन्तलम् १-३अङ्काः) |
| | | DSE-2 | शकुन्तलायाः पतिगृहप्रस्थानम्<br>(अभिज्ञानशाकुन्तलम् १-४अङ्काः) |
| | | GE-3 | किरातार्जुनीयमहाकाव्ये राजनैतिकाः विचाराः<br>(किरातार्जुनीयम् – द्वितीयसर्गः) |
| 4 | शास्त्री/द्वितीयम्/चतुर्थः | DSCC-8 | शब्दशक्तिः<br>(साहित्यदर्पणः २ परिच्छेदः) |
| | | DSCC-9 | शकुन्तलादुष्यन्तयोः पुनःसमागमः<br>(अभिज्ञानशाकुन्तलम् ४-७ अङ्काः) |
| | | DSCC-10 | पुत्र्याः तपस्यायाश्च महत्त्वम्<br>(कुमारसम्भवम् १, 5 सर्गौ) |
| | | GE-4 | नाटिकापरम्परा रत्नावली च<br>(रत्नावली) |
| 5 | शास्त्री/तृतीयम्/पंचमः | DSCC-11 | भारतीयकाव्यशास्त्रे रसो नायकश्च<br>(साहित्यदर्पणः ३ परिच्छेदः) |
| | | DSCC-12 | नलदमयन्त्योः पूर्वरागः<br>नैषधीयचरितम् (१ सर्गः) |
| | | DSE-3 | काव्यशास्त्रे निरूपिताःपदार्थाः |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | (कान्तिचन्द्रभट्टाचार्यविरचिता काव्यदीपिका) |
| | | GE-5 | ऐतिहासिकं गद्यसाहित्यम् –हर्षवर्धनस्य हूणविजययात्रा<br>(हर्षचरितम् ५ उच्छवासः) |
| 6 | शास्त्री/तृतीयम्/षष्ठः | DSCC-13 | संस्कृते अनूदितं साहित्यम् अनुवादश्च |
| | | DSCC-14 | आधुनिकपद्यसाहित्यम्– नारीणाम् आदर्शो वैदेही<br>(वैदेहीचरितम्, रामचन्दरमिश्रः) |
| | | DSCC-15 | शिवाजीमहाराजस्य राष्ट्रनिर्माणकौशलम्<br>(अम्बिकादत्तव्यासस्य शिवराजविजयम्) |
| | | GE-6 | अनूदितसाहित्ये लावण्यमयी<br>(लावण्यमयी, अप्पाशास्त्री) |
| 7 | शास्त्रिप्रतिष्ठा/चतुर्थम्/सप्तमः | DSCC 16 | नाट्यसंग्रहस्य परिचयः<br>(भरतकृतं नाट्यशास्त्रम्- षष्ठः अध्यायः) |
| | | DSCC-17 | रीतिसम्प्रदायः वामनश्च |
| | | DSCC-18 | गौतमबुद्धस्य चरितम्<br>(बुद्धचरितम्, १-३ सर्गाः) |
| | | DSCC-19 | राष्टस्य एकतायां चाणक्यस्य अवदानम्<br>(मुद्राराक्षसम्, १-४ अङ्काः) |
| 8 | शास्त्रिप्रतिष्ठा/चतुर्थम्/अष्टमः | DSCC-20 | रुय्यकसम्मताः अलङ्काराः<br>(अलङ्कारसर्वस्वम्, समासोक्तिपर्यन्तम्) |
| | | DSCC-21 | मुकुलभट्टसम्मता अभिधावृत्तिः<br>(अभिधावृत्तिमातृका) |
| | | DSCC-22 | भगवतो गोविन्दस्य माहात्म्यम्<br>(गीतगोविन्दम्- १-४ सर्गाः) |
| | | DSCC-23 | अर्वाचीननाटकसाहित्यम्<br>(भारविवेकम्- (१-४ दृश्यम्, १० दृशम्) यतीन्द्रविमलचतुर्धुरीविरचितम्) |
| 9 | शास्त्रिशोधप्रतिष्ठा/चतुर्थम्/सप्तमः | DSCC-16 | रसप्रस्थानम् |
| | | DSCC-17 | वक्रोक्तिप्रस्थानम् औचित्यप्रस्थानं च |
| | | DSCC-18 | रीतिप्रस्थानम् |
| | | DSCC-19 | अलङ्कारप्रस्थानम्<br>(अलङ्कारशास्त्रस्य प्राचीनस्रोतांसि) |
| 10 | शास्त्रिशोधप्रतिष्ठा/चतुर्थ/अष्टमः | DSCC-20 | पाण्डुलिपिविज्ञानम् |
| | | DSCC-21 | शोधप्रविधिः |
| | | DSCC-22 | राष्ट्रियशिक्षानीतिः तत्र संस्कृतं च |

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
सम्पूर्णसाहित्यपाठ्यक्रमः
(आचार्यप्रथमवर्षम् +आचार्यद्वितीयवर्षम्(अलंकारवर्गः/नाट्यवर्गः/ काव्यवर्गः)

| क्रमसं. | कक्षा/वर्षम्/सत्रार्धः | पत्रनाम | पाठ्यक्रमः |
|---|---|---|---|
| 1. | आचार्यः/प्रथमम्/प्रथमः | DSCC-16 | काव्यस्वरूपं शब्दवृत्तयश्च<br>(काव्यप्रकाशः- 1, 2, उल्लासौ) |
| | | DSCC-17 | ध्वनिसिद्धान्तः<br>(ध्वन्यालोकः-1, 2 उद्योतौ) |
| | | DSCC-18 | पण्डितराजदिशा काव्यस्य लक्षणम्, भेदाः, कारणं, रसस्वरूपं च<br>(रसगङ्गाधरः-1 आननम्) |
| | | DSCC-19 | वक्रोक्तिसिद्धान्तः<br>(प्रथमः विमर्शः-काव्यानुमितिपर्यन्तम्) |
| 2. | आचार्य/प्रथमम्/द्वितीयः | DSCC-20 | ध्वनिः गुणीभूतव्यङ्ग्यभेदाश्च<br>(काव्यप्रकाशः- 4-रसनिरूपणपर्यन्तम्, 5-गुणीभूतव्यङ्ग्यपर्यन्तम्।) |
| | | DSCC-21 | व्यञ्जकमुखेन ध्वनेः भेदः, रसादीनां प्राधान्यं काव्यसंवादश्च<br>(ध्वन्यालोकः-3, 4 उद्योतौ) |
| | | DSCC-22 | रसगंगाधरः<br>(प्रथमानने भावनिरूपणादारभ्य अन्तिमं यावत्) |
| | | DSCC-23 | औचित्यसिद्धान्तः काव्यशास्त्रसङ्ग्रहश्च<br>(क्षेमेन्द्रस्य औचित्यविचारचर्चा, राजशेखरस्य काव्यमीमांसा-१,२,३,४।) |
| 3. | आचार्य/द्वितीयम्/तृतीयः(अलङ्कारवर्गः | DSCC-24 | काव्यदोषाः<br>(7 उल्लासः सम्पूर्णः) |
| | | DSCC-25 | संलक्ष्यक्रमध्वनिः<br>(द्वितीयानन्व् आदितः उभयशक्त्युद्भवध्वनिपर्यन्तम्) |
| | | DSCC-26 | अनुमाने ध्वनेः अन्तर्भावः<br>( प्रथमविमर्शः-काव्यानुमितिपर्यन्तम्) |
| | | DSCC-27 | काव्यशब्दस्वरूपम् (दण्डिभामहदृशा)<br>(काव्यादर्शः 6परिच्छेदः)+ काव्यादर्शः(1परिच्छेदः) |
| 4. | आचार्य/द्वितीयम्/चतुर्थः(अलङ्कारवर्गः) | DSCC-28 | भोजसम्मता बाह्यालङ्काराः<br>सरस्वतीकण्ठाभरणम्-परिच्छेदः-2 शब्दालङ्काराः) |
| | | DSCC-29 | काव्यालङ्कारकारिकायां पाश्चात्यकाव्यशास्त्रेच |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | प्रतिपादिताः सिद्धान्ताः |
| | | DSCC-30 | पाण्डुलिपिविज्ञानम् / शोधप्रविधिः |
| | - | - | लघुशोधप्रबन्धः |
| 5. | आचार्य/द्वितीयम्/तृतीयः(नाट्यवर्गः) | DSCC-24 | भारतीयनाट्यपरम्परा<br>(नाट्यशास्त्रम्-(1-2 अध्यायौ) |
| | | DSCC-25 | आङ्गिकः अभिनयः<br>नाट्यशास्त्रम्-(8 अध्यायः) |
| | | DSCC-26 | शूद्रकस्य भट्टनारायणस्य च नाट्यसाहित्यम्<br>(वेणीसंहारः, मृच्छकटिकं च) |
| | | DSCC-27 | धनञ्जयसम्मतानि दशरूपकाणी<br>(दशरूपकम्) |
| | आचार्य/द्वितीयम्/चतुर्थः(नाट्यवर्गः) | DSCC-28 | भासस्य भवभूतेश्च नाट्यरचनाकौशलम्<br>(उत्तररामचरितम्, स्वप्नवासवदत्तं च) |
| | | DSCC-29 | धीरनैषधम् (रामावतारशर्मणः) |
| | | DSCC-30 | पाण्डुलिपिविज्ञानम् / शोधप्रविधिः |
| | - | - | लघुशोधप्रबन्धः |
| 10 | आचार्य/द्वितीयम्/तृतीयः(काव्यवर्गः) | DSCC-24 | शास्त्रकाव्यम्<br>भट्टिकाव्यम् (1,2,3 सर्गाः) |
| | | DSCC-25 | चम्पूसाहित्यम्<br>नलचम्पूः (1 उच्छवासः) |
| | | DSCC-26 | महाकाव्यं पुरातनं नवीनञ्च<br>(विक्रमाङ्कदेवचरितम्-प्रथमसर्गः, दयानन्ददिग्विजयं १-३ सर्गाः) |
| | | DSCC-27 | दशकुमाराणां जीवनवृत्तान्तः<br>(दशकुमारचरितम् (अष्टमः उच्छवासः) |
| | आचार्य/द्वितीयम्/चतुर्थः(काव्यवर्गः) | DSCC-28 | थाइलैण्ड्देशे श्रीरामचरितम्<br>(रामकीर्तिमहाकाव्यम् – १-८ सर्गाः) |
| | | DSCC-29 | प्राचीनगद्यसाहित्यम् / गीतिकाव्यपरम्परा<br>(वासवदत्ता) (पण्डितराजरचिता गङ्गालहरी सम्पूर्णा) |
| | | DSCC-30 | पाण्डुलिपिविज्ञानम् अथवा शोधप्रविधिः |
| | - | - | लघुशोधप्रबन्धः |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत

शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्राधम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रथमवर्षम् | प्रथमम् | DSCC-1 | साहित्यशास्त्रस्य परिचयः | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. साहित्यशास्त्रस्य नामकरणं तद्ग्रन्थाश्च<br>• साहित्यशब्दार्थः<br>• साहित्यशास्त्रस्य नामानि<br>• साहित्यशास्त्रस्य ग्रन्था:<br>(नाट्यशास्त्रम्, काव्यादर्शः, भामहकृतः काव्यालङ्कारः, काव्यालङ्कारसूत्रवृत्तिः, ध्वन्यालोकः, औचित्यविचारचर्चा, वक्रोक्तिजीवितम्, व्यक्तिविवेकः, काव्यप्रकाशः, साहित्यदर्पणः, रसगङ्गाधरः, काव्यालङ्कारकारिका, अभिराजयशोभूषणम्, अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम्,काव्यतत्त्वसमन्विति) | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. काव्यस्य प्रयोजन-कारण-लक्षण-भेदा:<br>• काव्यप्रयोजनम्<br>• काव्यकारणम्<br>• काव्यलक्षणम्<br>• काव्यभेदः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. गुणपरिचयः<br>• गुणस्वरूपम्<br>• गुणभेदः-<br>➢ त्रयो गुणाः<br>➢ अष्टौ गुणाः<br>➢ दश गुणाः<br>➢ विंशतिः गुणाः | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. अलङ्कारपरिचयः<br>• अलङ्कारस्य सामान्यलक्षणम्<br>• अलङ्कारभेदः<br>➢ शब्दालङ्कारः<br>➢ अर्थालङ्कारः<br>➢ उभयालङ्कारः<br>• गुणालङ्कारयोः भेदः | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-** साहित्यशास्त्रस्य सामान्यपरिचयप्रदानम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1.साहित्यशास्त्रमिति नाम नामान्तराणि च ज्ञास्यन्ति।<br>2. साहित्यशास्त्रीयग्रन्थानां परिचयस्य प्रदाने समर्थाः भविष्यन्ति।<br>3.गुणस्य स्वरूपं भेदान् च ज्ञास्यन्ति।<br>4.अलंकारविषयं ज्ञातुं ज्ञापयितुं च समर्थाः भविष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** निम्नलिखितग्रन्थेभ्यः उपर्युक्तः पाठ्यांशः<br>1.काव्यप्रकाशः, मम्मटः, भट्टवामनाचार्यः, (झलकीकरः), | | | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | परिमल- पब्लिकेशनम्, दिल्ली, 2008<br>2. साहित्यदर्पणः, शालिग्रामशास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2000<br>3.काव्यालंकारसूत्राणि, वामनः, श्रीगोपेन्द्रत्रिपुरहरभूपालः, चौखम्बासंस्कृत- सुरभारती प्रकाशनम्, वाराणसी, 2001<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.काव्यात्ममीमांसा, डा. जयमन्तमिश्रः, चौ.वि-भ- वाराणसी, 2005<br>2.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत

शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रथमवर्षम् | प्रथमम् | DSCC-2 | **शिशुपालवधमहाकाव्ये वर्णिता राजनीतिः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. महाकाव्यपरम्परा**<br>• महाकाव्यस्य लक्षणम्<br>• माघस्य परिचयः<br>• शिशुपालवधस्य कथासारः | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. बलरामस्य उक्तियाताथ्यर्म्** | 1 | | 16+04 |
| | | | • महीयसां लक्षणम्<br>• बलरामस्य स्वरूपम्<br>• बलरामस्य उक्तौ दण्डनीतेः महत्त्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | • बलरामेन कृता श्रीकृष्णस्य उक्तिप्रशंसा<br>**3. बलरामोक्तौ युक्त्युपस्थापना**<br>• वक्तुं स्थितस्य उद्धवस्य कृते आक्षेपः<br>• शिशुपालं प्रति आक्रमणे युक्त्युपस्थापना<br>• यादवसेनायाः शक्तिप्राचुर्यम्<br>• यादवसेनायाः कर्तव्यविषये बलरामेण दत्ता सूचना<br><br>**4. उद्धवस्योक्तौ सामनीतेर्महत्त्वम्**<br>• उद्धवेन कृता बलरामस्य उक्तिप्रशंसा<br>• सत्कवेः शब्दार्थाश्रयणम् इव राज्ञां पौरुषभाग्ययोः आश्रयणम्<br>• शिशुपालं प्रति आक्रमणं नोचितम् इति पक्षे उद्धवस्य युक्तिः<br>• शब्दविद्या इव राजनीतिः अपस्पशा नो भाति।<br><br>**उद्देश्यम्-** काव्यमाध्यमेन राजनीति- अवबोधनम्<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. माघस्य रचनाशैलीं ज्ञस्यन्ति।<br>2. प्राचीनराजनीतिविषये ज्ञानम् अवाप्स्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः-**<br>शिशुपालवधमहाकाव्यम्, (सर्गः-२) महाकविमाघः, मल्लिनाथ,श्रीपण्डितहरगोविन्दशास्त्री, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2015<br>**सहायकग्रन्थाः-** | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-221001<br>2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, 2001<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत

शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रम | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रथमवर्षम् | द्वितीयम् | DSCC-3 | शतककाव्येषु नीतिशतकम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. शतककाव्यपरम्परा<br>• शतककाव्यस्य परिचयः<br>• नीतिशतकस्य वैशिष्ट्यम्<br>• भर्तृहरेः कवित्वम्<br>• नीतेः सामाजिकं प्राधान्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. स्वभावनिर्णयः<br>• मूर्खाणां वैविध्यं विद्यायाः महत्त्वं च<br>• वाग्भूषणस्य महत्त्वम्<br>• क्षान्तिदाक्षिण्ययोः महत्त्वम्<br>• सत्संगतेः महत्त्वम्<br>(दिक्कालाद्यनव -१ इति पद्यादारभ्य जाड्यं धियो -२५ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. दुष्टसज्जनयोः भेदः<br>• जनानाम् उत्तमत्वम्<br>• दुरात्मनां प्रकृतिसिद्धम्<br>• खलसज्जनानां मैत्री<br>• महात्मनां प्रकृतिः प्रकृतिमहसां मण्डनं च<br>(प्राणाघातात् -२६ इति पद्यादारभ्य करे श्लाघ्यस्त्याज्यः -६५ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. संसर्गमाहात्म्यम्<br>• नराणां वृद्धिक्षयकारणम्<br>• कर्मणः माहात्म्यम्<br>• पुराकृतानि पुण्यानि<br>• नरस्य पूर्वसुकृतं सत्यव्रतव्यसनिनः स्वभावः च<br>(सम्पत्सु महतां चित्तं -६६ इति पद्यादारभ्यलज्जागुणौघ -१०८ इति पद्यपर्यन्तम्)<br><br>**उद्देश्यम्-** नैतिकमौल्यस्य अवबोधनम्<br><br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनेन छात्राः-<br>1. उत्तमस्वभावं ज्ञातुं प्रभविष्यन्ति।<br>2. दुष्टसज्जनयोर्भेदान् अवगमिष्यन्ति।<br>3. सज्जनसंसर्गे प्रेरणां प्राप्स्यन्ति।<br>3. संसर्गस्य माहात्म्यं च सम्यक् ज्ञास्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-**<br>1. नीतिशतकम्, भर्तृहरिः, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 2010<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2007<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रथमवर्षम् | द्वितीयम् | DSCC-4 | **मेघदूते वर्णितानि भौगोलिकक्षेत्राणि** | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. खण्डकाव्यपरम्परा<br>• खण्डकाव्यस्य परिचयः<br>• मेघदूतस्य वैशिष्ट्यम्<br>• कालिदासस्य कवित्वम्<br>• यक्षस्य विप्रलम्भः | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. यक्षस्य दुःखनिवेदनम्<br>• वर्षभोग्यः शापः<br>• कामार्त्तस्य प्रकृतिकृपणत्वम्<br>• कुसुमसदृशं हृदयम्<br>• शिखरस्य श्यामस्तसादृश्यम्<br>उपमा, उत्प्रेक्षा, मन्दाक्रान्ता च<br>(कश्चित्कान्ता -१ इति पद्यादारभ्य छन्नोपान्तः -१८ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. जलधरस्य मार्गदर्शनम्<br>• विन्ध्यपादे विशीर्णादर्शनम्<br>• वेत्रवतीनदीदर्शनम्<br>• विशालापुरीदर्शनम्<br>• शिप्रानदीदर्शनं महाकालदर्शनञ्च<br>(अध्वक्लान्तं -१९ इति पद्यादारभ्य अप्यन्यस्मिन् जलधर -३८ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. प्रकृतिवर्णनम्<br>• सान्ध्यतेजोवर्णननम्<br>• गम्भीरानदीवर्णनम्<br>• रन्तिदेवस्य कीर्त्तिकथा<br>• कैलासवर्णनं मानससरोवर्णनञ्च<br>(पादन्यासैः क्वणित -३९ इति पद्यादारभ्य तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव -६७ इति पद्यपर्यन्तम्)<br><br>**उद्देश्यम्-** विप्रलम्भशृङ्गारपरकस्य मेघदूतकाव्यस्य अवबोधनम्।<br><br>**परिणामः**-अस्य पाथ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. खण्डकाव्यपरम्परां परिचेष्यन्ति।<br>2. प्राचीनभूगोलविज्ञानम् अवाप्स्यन्ति।<br>3. प्रकृतिवर्णनसौन्दर्यम् अवगम्य तादृशकाव्यप्रवृत्तौ प्रेरणां लप्स्यन्ते।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः-**<br>1. मेघदूतम्, कालिदासः, डा.दयाशङ्करशास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2017<br><br>सहायकग्रन्थः- | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1.संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,2007<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्री-प्रथमवर्षम् | द्वितीयम् | DSCC-5 | प्रमुखाणि छन्दांसि कविशिक्षा च | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. छन्दःशास्त्रपरम्परा<br>• छन्दःशास्त्रस्य परिचयः<br>• गङ्गादासस्य पाण्डित्यं छन्दोमञ्जर्याः मौलिकता च<br>• वृत्तभेदाः (मात्रावृत्तम्-आर्या, गीतिः च। गणवृत्तम्-समम्, अर्धसमम्, विषमं च)<br>• गुरुलघुनिर्देशः(ऽ,।) उक्थादिगणना च | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. छन्दांसि -१<br>• अनुष्टुप् छन्दः (अष्टाक्षरावृत्तिः-श्लोकः, विद्युन्माला-)<br>• पङ्क्तिः छन्दः (दशाक्षरावृत्तिः- मत्ता वृत्तम्)<br>• त्रिष्टुप् छन्दः (एकादशाक्षरा वृत्तिः- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजातिः, शालिनी, दोधकम्)<br>• जगती छन्दः (द्वादशाक्षरा वृत्तिः- वंशस्थम्, भुजङ्गप्रयातम्, तोटकम्, द्रुतविलम्बितम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. छन्दांसि-२<br>• अतिजगती छन्दः (त्रयोदशाक्षरा वृत्तिः- प्रहर्षिणी, मत्तमयूरम्, मञ्जुभाषिणी)<br>• शक्वरी छन्दः (चतुर्दशाक्षरा वृत्तिः- वसन्ततिलका)<br>• अतिशक्वरी छन्दः (पञ्चदशाक्षरा वृत्तिः- मालिनी)<br>• अष्टिः छन्दः (षोडशाक्षरा वृत्तिः- पञ्चचामरम्)<br>• अत्यष्टिः छन्दः (सप्तदशाक्षरा वृत्तिः- शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, पृथ्वी) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. कविशिक्षा<br>• शास्त्रसङ्ग्रहः<br>(अथातः काव्यं मीमांसिष्यामहे इत्यारभ्य कविभ्यो राजशेखरः इति पर्यन्तम्)<br>• कविचर्या राजचर्या च<br>(गृहीतविद्योपविद्यः इत्यारभ्य स सुखी तत्र तत्र च इति पर्यन्तम्)<br>• शब्दार्थहरणोपायाः<br>(परप्रयुक्तयोः शब्दार्थयोः इत्यारभ्य मन्यतां स महाकविः इति पर्यन्तम्)<br>• कविसमयः<br>(अशास्त्रीयमलौकिकं च परम्परायातम् इत्यारभ्य पातालीयश्च कथ्यते इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्- छन्दसां कविशिक्षायाश्च अवबोधनम्।<br>**परिणामः**:- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः:-<br>1.छन्दःशास्त्रस्य सामान्यपरिचयं प्राप्स्यन्ति।<br>2. अनुष्टुब्बृहती-इत्यादिनिर्दिष्टानां छन्दसां परिचयं प्राप्स्यन्ति। | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 3.साहित्यस्य रचनार्थम् अपेक्षितां कविशिक्षां प्राप्स्यन्ति।<br>4.पद्यरचनां कर्तुं प्रेरणां प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-**<br>1.श्रीगङ्गादासप्रणीता छन्दोमञ्जरी, व्याख्या. डा. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-२२१००१<br>2. हिन्दी काव्यमीमांसा सं. डा. गंगासागर राय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-२२१००१<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.काव्यालंकारसूत्राणि, वामनः, श्रीगोपेन्द्रत्रिपुरहरभूपालः, चौखम्बासंस्कृत- सुरभारती प्रकाशनम्, वाराणसी, 2001<br>**2.**पिङ्गलस्य छन्दःशास्त्रम्,<br>3. छन्दस्कलावती, डॉ. रामकिशोरमिश्रः, प्रका. स्वयं, संस्कृत विभाग, महा. मा. म. वि., खेकड़ा, 1991 ।<br>4.छन्दःसमीक्षा, (समीक्षाग्रन्थः) पं. मधुसूदनओझा, सं. श्री सुरजनदासस्वामि राजस्थान संस्कृत अकादेमी, जयपुर, राजस्थान, 1991 ।<br>5.छन्दःसन्दोहः, (काव्यम्) दत्तदीनेशचन्द्रः, अन्तर्राष्ट्रीय ग्रन्थागार, पो. ऑ. बाक्स 149, प्राप्ति स्थान – मोतीलाल बनारसीदास, बैंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली, जयपुर, 1968 ।<br>6.छन्दोऽभिराजीयम्, (छन्दःशास्त्रम्) अभिराजराजेन्द्रमिश्रः, वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1999 ।<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-द्वितीयवर्षम् | तृतीयम् | DSCC-6 | यौवनसमयोचितः उपदेशः (शुकनासोपदेशानुसारेण) | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. शुकनासोपदेशः<br>• उपदेशपरम्परा<br>• बाणस्य परिचयः कादम्बरी च<br>• शुकनासस्य व्यक्तित्वम्<br>दारुणो लक्ष्मीमदः,<br>• अनर्थपरम्परा, रागमलावलेपदोषः च | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. पुरुषस्य स्वभावः<br>• यौवनकालस्य दोषाः<br>• मनसः मृगतृष्णिका<br>• अत्यासङ्गदोषः<br>• हितोपदेशेषु अश्रद्धा | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. राजप्रकृतिः<br>• राजलक्ष्मीप्रभावः<br>• लक्ष्मीचिह्नानि<br>• लक्ष्म्याः दुःखेन परिपालनम्<br>• लक्ष्म्याः विपरीतवृत्तिः लक्ष्म्याः परिभ्रमः च | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. लक्ष्म्याः विलासः<br>• लक्ष्म्याः विश्वरूपत्वग्रहणम्<br>• लक्ष्म्याः कोशमण्डलमोक्षः<br>• लक्ष्म्याः चाञ्चल्यम्<br>• लक्ष्म्याः तमोबाहुल्यं सर्वाविनयानां पुरःपताका च | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-** यौवनोचितविविधोपदेशानाम् अवबोधनम्।<br><br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. गद्यसाहित्यस्य वैशिष्ट्यं ज्ञास्यन्ति।<br>2. वर्णनाप्रकारान् अलङ्कारसन्निवेशप्रकारान् च ज्ञास्यन्ति।<br>3. उपदेशसाहित्ये राजनीतौ किं स्थानमिति च अवगमिष्यन्ति।<br>4. बाणभट्टस्य समासप्रयोगकौशलं ज्ञास्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः-** बाणभट्टविरचिता कादम्बरी (शुकनासोपदेशः)<br><br>**सहायकग्रन्थः-**<br>**1.**संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,2007<br>**2.**संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-द्वितीयवर्षम् | तृतीयम् | DSCC-7 | **शकुन्तलादुष्यन्तयोः गान्धर्वविवाहः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. रूपकपरम्परा**<br>• दशरूपकाणां परिचयः (नाटकम्, प्रकरणम्, प्रहसनम्, भाणः, व्यायोगः, समवकारः, डिमः, वीथिः, अङ्कः, ईहामृगः)<br>• रूपकाणां सामाजिकं प्रधान्यम्, नाटकस्य स्वरूपम्<br>• धनञ्जयस्य रूपकतत्त्वप्रतिपादनकौशलम् अभिज्ञानशाकुन्तलस्य वैशिष्ट्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. नाटकस्य वैशिष्ट्यम्**<br>• नाटकलक्षणम् पञ्च सन्धयः च<br>• नायकानां वैविध्यम्<br>• धीरोदात्तः नायकः<br>• नायिकानां वैविध्यम् नान्दीलक्षणं च | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. राज्ञः दुष्यन्तस्य आश्रमप्रवेशः**<br>• नान्दीपाठः प्रस्तावना च<br>• राज्ञः दुष्यन्तस्य आश्रमपदप्रवेशः<br>• कण्वाश्रमवर्णनम्<br>• तपस्विकन्यास्वभाववर्णनम्<br>• शकुन्तलायाः दुष्यन्तदर्शनम्, | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. अन्योन्यम् अनुरक्तयोः दुष्यन्तशकुन्तलयोः मनोभावाः**<br>• मृगयाविनोदस्य स्थानम्<br>• दुष्यन्तेन कृतं शकुन्तलावर्णनम्<br>• दुष्यन्तमाढव्यसंवादः<br>• शकुन्तलायां मदनभावाः<br>• राजशकुन्तलयोः समागमः | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- दशरूपकाणां सामान्यपरिचयप्रदानम्। तृतीयाङ्कान्तस्य अभिज्ञानशाकुन्तलस्य अवबोधनम्।<br><br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. दशप्रकाराणां रूपकाणां ज्ञानम् अवाप्स्यन्ति।<br>2. नाट्ये नायिकानायकानां वैशिष्ट्यम् अवगमिष्यन्ति।<br>3. नाट्यशास्त्रोक्तविषयाणां प्रयोगविज्ञातारो भविष्यन्ति।<br>4. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य नाट्यसौन्दर्यं परिचेष्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः**:- 1. धनञ्जयविरचितं दशरूपकम्<br>2. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कालिदासः, राघवभट्टः, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, 2016 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संस्कृत | **सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,2000<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>3.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धः | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-द्वितीयवर्षम् | चतुर्थः | DSCC 8 | शब्दशक्तिः | | 4 | 64+16 |
| | | | १. वाक्यादिस्वरूपम्<br>• वाक्यलक्षणम्<br>• पदलक्षणम्<br>• अर्थत्रैविध्यम्<br>• अभिधालक्षणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | २. लक्षणा तद्भेदाश्च<br>• लक्षणावृत्तिः<br>• कर्मणि कुशलः<br>• लक्षणाभेदाः (व्यङ्ग्यस्य गूढागूढभेदपर्यन्तं षोडशभेदाः एव)<br>• गौर्वाहीकः | 1 | | 16+04 |
| | | | ३. व्यञ्जना तद्भेदाश्च<br>• व्यञ्जनास्वरूपम्<br>• अभिदामूला व्यञ्जना<br>• लक्षणामूला व्यञ्जना<br>• शाब्दी व्यञ्जना<br>• आर्थी व्यञ्जना | 1 | | 16+04 |
| | | | ४. संयोगादयः<br>• संयोगः, विप्रयोगः, साहचर्यम्, विरोधिता<br>• अर्थः, प्रकरणम्, लिङ्गम्, अन्यस्य शब्दस्य सन्निधिः, सामर्थ्यम्<br>• औचिती, देशः, कालः, व्यक्तिः, स्वरादिः | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्- अभिधा-लक्षणा-व्यञ्जनानां शब्दशक्तीनां अवबोधनम्<br>**परिणामः** – अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. वाक्य-पद-अर्थ-अभिधानां स्वरूपं ज्ञास्यन्ति।<br>2. लक्षणायाः तद्भेदानाञ्च स्वरूपम् अवगमिष्यन्ति।<br>3. व्यञ्जनायाः तद्भेदानाञ्च स्वरूपम् अवगमिष्यन्ति।<br>4. काव्येषु प्रयुक्तानां वृत्तीनाम् परिशीलनसामर्थ्यं प्राप्स्यन्ति।<br>5. अनेकार्थकशब्दानां प्रयोगपरिशीलनसामर्थ्यं प्राप्स्यन्ति,<br>पाठ्यग्रन्थः १. साहित्यदर्पणः (द्वितीयपरिच्छेदः) आचार्यलोकमणिदहालः, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम् -, वाराणसी, 2008<br>**सहायकग्रन्थः -**<br>१. काव्यप्रकाशःमम्मटः ,, भट्टवामनाचार्यः, (झलकीकरः(, परिमलपब्लिकेशनम् -, दिल्ली, 2008<br>२. रसगंगाधरः, पं.जगन्नाथः, पं.बदरीनाथझा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-द्वितीयवर्षम् | चतुर्थम् | DSCC-9 | शकुन्तलादुष्यन्तयोः पुनः समागमः | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. शकुन्तलासौप्रस्थानिकम् | 1 | | 16+04 |
| | | | • शकुन्तलासौप्रस्थानिकनिर्णयः<br>• कण्वस्य पुत्रीविषयकं वात्सल्यम्<br>• आश्रमवासिनां विरहावस्था<br>• कण्वोपदेशः | 1 | | 16+04 |
| | | | • शकुन्तलायाः सुप्रस्थानम्<br><br>2. विवाहविस्मृतिवृत्तान्तः<br>• जननान्तरसौहृदम्<br>• परोपकारिस्वभावः<br>• वैरीभवति सौहृदम्<br>• प्रभुतायाः क्लेशः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. अभिज्ञानवृत्तान्तः<br>• धीवरस्योपदेशः व्रीडाविलक्षं गोत्रस्खालित्यं च<br>• मनसिजस्य चूतशरप्रहारः<br>• हृदयेन चित्रीकृता कान्ता | 1 | | 16+04 |
| | | | • वसुन्धरा महते फलाय, जनानां महिमाप्रतिपत्तिः च<br><br>4. दुष्यन्तशकुन्तलयोः समागमः<br>• सत्क्रियागुणगणनम्<br>• राजमातलिसंवादः धर्माभिषेकक्रिया च<br>• मारीचाश्रमवर्णनम्<br>• नियतैकपतिव्रतत्वम् | | | |
| | | | **उद्देश्यम्**- कालिदासकालिकसामाजिकदशायाः, राजधर्मस्य, तपसः, श्रद्धा-वित्त-विधिसमन्वयस्य च अवबोधनम्। | | | |
| | | | **परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनानन्तरं छात्राः -<br>1. अभिज्ञाशाकुन्तलस्य रचनायाः सौन्दर्यं ज्ञास्यन्ति।<br>2. पुरातननाट्यप्रयोगपरम्पराविज्ञानम् अवगमिष्यन्ति।<br>3. शकुन्तलादुष्यन्तयोः मर्यादितानुरागस्य परिणामं ज्ञास्यन्ति। | | | |
| | | | **पाठ्यग्रन्थः**-<br>1.अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कालिदासः, राघवभट्टः, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, 2016<br>**सहायकग्रन्थः**-<br>1.कालिदासग्रन्थावली, कालिदास, ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, पण्डित | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | रामतेजशास्त्री, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2019<br>संस्कृतसाहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-2001<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-द्वितीयवर्षम् | चतुर्थम् | **DSCC-10** | पुत्र्याः तपस्यायाश्च महत्त्वम् | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. महाकाव्यसाहित्यम्**<br>• संस्कृतसाहित्यस्य इतिहासः<br>• पद्यसाहित्यस्य इतिहासः<br>• कालिदासस्य द्वे महाकाव्ये<br>• कुमारसम्भवस्य वैशिष्ट्यं पर्वतानां माहात्म्यं च | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. हिमालयवर्णनम्**<br>• हिमालयस्य महत्त्वम्<br>• सत्याः शैलवधूप्राप्तिः<br>• नवयौवनविभक्तं वपुः<br>• अयाचितृदानहीनता पार्वत्याः गिरिशोपचारः च | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. तपसः महत्त्वम्**<br>• पार्वत्याःहृदयेन रूपनिन्दा<br>• पार्वत्याः तपश्चर्याप्रक्रमः<br>• तपसः परा काष्ठा शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनं च<br>• तपस्विनामप्युपदेशता सङ्गतं साप्तपदीनं च | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. तपःसाधनम्**<br>• त्रिवर्गसारः धर्मः रत्नग्रहणवादः च<br>• वपुषः तपःसाधनत्वम्<br>• पुष्पधन्वनो विशीर्णमूर्तित्वम्<br>• किन्नरराजकन्यकारोदनं मन्दैः महात्मनां चरितनिन्दा च<br><br>**उद्देश्यम्**- हिमालयस्य पुत्र्याः तपसश्च महत्त्वस्य अवबोधनम्।<br><br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. हिमालयस्य महत्त्वं ज्ञास्यन्ति।<br>2. वपुषः तपःसाधनत्वे माहात्म्यम् अवगमिष्यन्ति।<br>3. भक्तेः गौरवं च ज्ञास्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः**- कुमारसम्भवम् (प्रथमपञ्चमसर्गौ) कालिदासरचितम्, चौखम्भा संस्कृतसंस्थान, वाराणसी,<br><br>**सहायकग्रन्थः**-<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>3.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-2001<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः। | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | आन्तरिकमूल्याङ्कनम्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत

शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रितृतीय वर्षम् | पञ्चमम् | DSCC 11 | भारतीयकाव्यशास्त्रे रसो नायकश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. वेदे साहित्यशास्त्रे च रसः**<br>• रसशब्दस्य व्युत्पत्तिः<br>• वेदे उपनिषदि च रसशब्दप्रयोगः<br>• प्राचीनालङ्कारिकाणां रसविषयिणी अवधारणा<br>• काव्ये रसस्य स्थानम्<br>• रससूत्रं तस्य व्याख्यानं च (विभावः, अनुभावः, व्यभिचारी, स्थायिभावः) | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. रससूत्रव्याख्यानं नवरसनिरूपणञ्च**<br>• भट्टलोल्लटस्य उत्पत्तिवादः श्रीशङ्कुकस्य अनुमितिवादश्च<br>• भट्टनायकस्य भुक्तिवादः अभिनवगुप्तस्य अभिव्यक्तिवादश्च<br>• शृङ्गारः, हास्यः, करुणः, रौद्रः, वीरः, भयानकः<br>• वीभत्सः, अद्भुतः, शान्तः, शान्तस्य रसत्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. रसस्य अलौकिकत्वम्**<br>• करुणादौ रसे सुखानुभवता<br>• रसास्वादने साधारणीकरणम्<br>• रसः न अनुकार्यगतः<br>• रसस्य न ज्ञाप्यः न कार्यः<br>• रसः न नित्यः, न सविकल्पकज्ञानवेद्यः, न निर्विकल्पकज्ञानवेद्यः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. शृङ्गारे नायकः**<br>• नायकलक्षणम्, धीरोदात्तः, धीरोद्धतः, धीरललितः, धीरप्रशान्तः च<br>• दक्षिणः, धृष्ट, अनुकूलः, शठः<br>• नायकसहायकाः- पीठमर्दः, विटः, विदूषकः, दूतः, दूती | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- रसस्य नायकप्रकाराणां च ज्ञापनम्।<br><br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. वैदिककालादारभ्य काव्यकालं यावत् प्रवृत्तस्य रसप्रवाहस्य ज्ञानम् अवाप्स्यन्ति।<br>2. शृङ्गारादीनां रसानां स्वरूपं ज्ञास्यन्ति।<br>3.भारतीयसाहित्येषु रसानां महत्त्वं वक्तुं शक्ष्यन्ति।<br>4. शृङ्गाररससम्बन्धिनायकस्वरूपम् अवगमिष्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः** साहित्यदर्पणः- चतुर्थः परिच्छेदः, आचार्यलोकमणिदहालः, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम् -, वाराणसी, 2008<br><br>**सहायकग्रन्थः**<br>1. काव्यप्रकाशःमम्मटः ,, भट्टवामनाचार्यः, (झलकीकरः(, परिमल - पब्लिकेशनम्, दिल्ली, 2008<br>2.संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, डा.सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>3.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा.राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-तृतीयवर्षम् | पञ्चमम् | DSCC-12 | नलदमयन्त्योःपूर्वरागः | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. महाभारतस्य वनपर्वणः कथावस्तु-आधारितं काव्यम्<br>• वनपर्वणः कथावस्तु<br>• नैषधीयचरितस्य वैशिष्ट्यम्<br>• श्रीहर्षस्य परिचयः कवित्वञ्च | 1 | | 16+04 |
| | | | • नैषधीयचरितस्य रचनाशैली<br>2. नलचरित्रवर्णनम्<br>• नलस्य प्रतापवर्णनम्<br>• नलाननस्योपमितौ दरिद्रता<br>• विदर्भजायाः मदनावेशः अवसरलाभेन स्मरस्य प्रवृत्तिः च<br>(निपीय यस्य -१ इति पद्यादारभ्य अमुष्य धीरस्य -४५ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. नलस्य विरहवर्णनम्<br>• दमयन्त्याः नलहृदयप्रवेशः हयदर्शनं वनगमनं च<br>• नलस्य केतकं प्रत्याक्रोशः<br>• नलस्य स्थलपद्मिनीदर्शनम्<br>(अनेन भैमीं घटयिष्यतः -४६ इति पद्यादारभ्य गता यदुत्सङ्गतले -९८ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. श्रीहर्षस्य करुणरसवर्णने पारङ्गमता<br>• पिकेन कुहूरुताह्वानं<br>• तडागवर्णनम्, हंसदर्शनम्<br>• हंसविलापः<br>• हंसस्य चक्रनिभचङ्क्रमणं<br>(नृपाय तस्मै हिमितं -९९ इति पद्यादारभ्य श्रीहर्षं कविराजराजि -१४५ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- दमयन्तीनलयोः पवित्रचरित्रस्य प्रकृतिप्रेम्णश्च बोधनम्<br>**परिणामः**- छात्राः अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनाद् अनन्तरं छात्राः-<br>1. महाभारतीयकथावस्तुनः काव्यस्वरूपम् अवगमिष्यन्ति।<br>2. श्रीहर्षस्य रचनापाटवं ज्ञास्यन्ति।<br>3. श्रीहर्षस्य रसालङ्कारयोजनाकौशलं ज्ञातुं प्रभविष्यन्ति।<br>4. श्रीहर्षस्य प्रकृतिप्रेम्णः परिचयं प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**- 1.नैषधीयचरितम्(प्रथमसर्गः सम्पूर्णः) श्रीहर्षः, नारायणरामाचार्यः, चौ.वि.भ.वाराणसी, 2012<br>**सहायकग्रन्थः**- 1.संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,2007<br>2. साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीयशिक्षानीतिकेअनुसारविकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत

शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-तृतीयवर्षम् | षष्ठम् | DSCC-13 | संस्कृते अनूदितं साहित्यम् अनुवादश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. आधुनिकं संस्कृतकसाहित्यम्<br>• आधुनिकसाहित्यस्य आरम्भकालः<br>• आधुनिकसमये अनुवादस्य आवश्यकता<br>• संस्कृतेऽनूदितसाहित्यम् (याज्ञसेनी उडियाभाषातः संस्कृतानुवादः)<br>• संस्कृतसाहित्यस्य विकासे अनुवादस्य भूमिका | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. साहित्यस्य भाषानुवादः<br>• भाषानुवादे समस्या समाधानञ्च<br>• भाषानुवादे नियमाः<br>• भाषानुवादे भावाभिव्यक्तिः<br>• आधुनिकसाहित्यानुवादे अनुवादकस्य योग्यता | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. पत्रकारितायाम् अनुवादः<br>• जागतिक-राष्ट्रिय-प्रादेशिकवृत्तान्तानाम् अनुवादः<br>• सास्कृतिक-क्रीडादिविषयाणाम् अनुवादः<br>• कार्यालयेषु सूचनानाम् अनुवादः<br>• आधुनिकसाहित्यानुवादे व्याकरणस्य भूमिका<br>• अनुवादे तुलनात्मकप्रक्रिया | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. प्रायोगिकाभ्यासः (Practical)<br>• संस्कृतात् हिन्दीभाषायां हिन्दीतः संस्कृतभाषायां च अनुवादः<br>• आङ्ग्लभाषातः संस्कृतभाषायाम् अनुवादः<br>• संस्कृतभाषातः आङ्ग्लभाषायाम् अनुवादः<br>• संस्कृतभाषातः प्रान्तीयभाषासु प्रान्तीयभाषातः संस्कृतभाषायां च अनुवादः | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- अनूदितसाहित्यस्य सामान्येन प्रत्यभिज्ञापनम्।<br>विविधभाषिक-अनुवादकौशलस्य अवबोधनम्।<br><br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. आधुनिक-अनुवादपरम्परां ज्ञास्यन्ति।<br>2. अनुवादसाहित्यनिर्माणे प्रेरणांप्राप्स्यन्ति।<br>3. अनूदितसाहित्यस्य सामान्यपरिचयं प्राप्स्यन्ति।<br><br>**सहायकग्रन्थः**<br>1.साहित्य और अनुवाद प्रक्रिया सम्पादकः डा. नरेश सिहाग, गीना प्रकाशन 202 पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-12702। हरियाणा<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रितृतीय वर्षम् | षष्ठम् | DSCC-14 | आधुनिकपद्यसाहित्यम् – नारीणाम् आदर्शो वैदेही | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **रामायणसाहित्यपरम्परा**<br>• सीताचरित्राश्रितकाव्यानि<br>• वैदेहीचरितकर्तृ रामचन्द्रमिश्रस्य परिचयः<br>• वैदेहीचरितस्य परिचयः | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **दुर्भिक्षदुष्प्रभावस्य वर्णनम्** (47-54 श्लोकाः)<br>• जनकवर्णनम् (1-11श्लोकाः)<br>• मिथिलावर्णनम् (12-46 श्लोकाः)<br>• पीडिताभिः प्रजाभिः प्रार्थितस्य जनकस्य दुर्भिक्षनिवारणाय यागसामग्रीःसंग्रहीतुम् आदेशः (55-64 श्लोकाः) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **वैदीहीप्रादुर्भावः**<br>• जनकेन प्रातर्यज्ञभूमेः कर्षणम् (1-11 श्लोकाः)<br>• वैदेह्याः प्रादुर्भावो जनकेन स्वमहिष्यै वैदेह्याः समर्पणं च (12-21 श्लोकाः) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. **सीतायाः स्वयंवरसङ्कल्पः**<br>• जनकस्य गार्हस्थ्यम् (22-31)<br>• सीताया बाल्यम्, यौवनम्, तया पित्रोरनुज्ञया स्वानुरूपस्य वरस्य गङ्गातो याचनं च (32-53 श्लोकाः)<br>• जनकेन वैदेहीस्वयम्वरायोजनाय जनकस्य संकल्पः (54-68 श्लोकाः) | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्:-** आधुनिककाव्यरचनारीतेः भारतीयादर्शनारीचरितस्य च शिक्षणम्।<br>**परिणाम:-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्रा:-<br>1.आधुनिकपद्यसाहित्यपरम्परायाः परिचयं प्राप्स्यन्ति।<br>2. कवेः रामचन्द्रमिश्रस्य काव्यरचनाशैलीं जास्यन्ति।<br>3.सीतायाः प्रादुर्भावरहस्यं वक्तुं शक्ष्यन्ति।<br>4.सीतायाः बाल्यचरतं ज्ञास्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थ:-** वैदेहीचरितम्, रामचन्द्रमिश्रः, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-2000<br>2. संकृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, 2001<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-तृतीयवर्षम् | षष्ठम् | DSCC 15 | शिवाजीमहाराजस्य राष्ट्रनिर्माणकौशलम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. गद्यसाहित्यरचनापरम्परा<br>• गद्यकाव्यस्य उद्गमः विकासः<br>• अम्बिकादत्तव्यासस्य परिचयः<br>• शिवराजविजयस्य कथावस्तु, नायकः, रसः च<br>• शिवराजविजयस्य ऐतिहासिकं महत्त्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. स्त्रीषु आदरभावः<br>• सूर्यदेवस्य माहात्म्यम्<br>• कन्यासमुद्धारः<br>• महात्मनः योगिराजस्य दीर्घकालिकं जीवितम्<br>• कन्यायाः वृत्तान्तः<br>• कलिकालस्य दुराचारिता (योगिराज-ब्रह्मचारिगुर्वोर्मध्ये आलापः) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. भारते यवनानाम् आक्रमणम्<br>• महाकालस्य (समयस्य) विलक्षणता<br>• गजनिराजस्य भारतस्योपरि आक्रमणम्<br>• गजनिराजस्य सोमनाथमन्दिरलुण्ठनम्<br>• शहाबुद्दीनस्य दिल्लीश्वरत्वप्राप्तिः<br>• शहाबुद्दीनस्य वाराणस्याः स्वायत्तीकरणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. औरङ्गजेबस्य सर्वाधिकारिता वटोः कन्यासंरक्षणे दृढसङ्कल्पः च<br>• औरङ्गजेबस्य उत्तरभारते सर्वाधिकारिता<br>• औरङ्गजेबस्य दक्षिणभारते प्रवेशः<br>• योगिराजस्य आशीर्वचनम्<br>• अफजलखानस्य शिवराजेन सह युद्धार्थम् आगमनम्<br>• कन्यासंरक्षणे कृतनिश्चयः गौरवटुः | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्** - गद्यसाहित्यपरम्परायाः शिवराजविजयस्य राष्ट्रभक्तेश्च अवबोधनम्।<br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. भारतीय-इतिहासज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br>2. देशभक्तेः जागरणं लप्स्यन्ते।<br>3. गद्यकाव्यरचनायाः शैलीम् अवगमिष्यन्ति।<br>4. विग्रहवाक्यं समासं च ज्ञास्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थ-:** अम्बिकादत्तव्यासरचितं शिवराजविजयम्<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 3.पाठ्यविषयाधारेण त्रिडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्री-1 | प्रथमम् | DSE-1 | **रघोः पराक्रमः कौत्सस्य गुरुदक्षिणा च** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. रघुं प्रति शत्रूणां भीतिः**<br>• सिंहासनाधिरूढस्य रघोः सकाशात् शत्रूणां भीतिः<br>• शरद्वर्णनम्<br>• रघोः दिग्विजययात्रा<br>• रघोः निकटे परिपन्थिराजानाम् आत्मसमर्पणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. रघोः दिग्विजयः**<br>• रघोः कलिङ्गदेशाक्रमणं विजयलाभश्च<br>• रघोः दाक्षिणात्यविजययात्रा<br>• रघोः पारसिकाणाम् उपरि विजयलाभः उत्तरदिग्भागं प्रति गमनं च<br>• रघोः कामरूपराजोपरि विजयलाभः | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. कौत्सस्य गुरुदक्षिणा**<br>• गुरुदक्षिणार्थिनः कौत्सस्य रघोः राजधानीं प्रति आगमनम्, रघुणा कृता आश्रमकुशलजिज्ञासा<br>• कौत्सस्य गुरुदक्षिणामाहर्तुं राजान्तरं प्रति गमनोद्यमः, रघोः तन्निवारणं च<br>• कुबेरस्य रघोः कोशागारे सुवर्णवर्षणम्<br>• कौत्सं प्रति रघोः सुवर्णादि दानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. रघुं प्रति कौत्सेन दत्तः आशीर्वादः**<br>• रघोः पितृत्वलाभः<br>• अजस्य विदर्भराजभोजराजधानी प्रति प्रस्थानम्, गन्धर्वराजपुत्रस्य प्रियंवदस्य शापमुक्तिः<br>• प्रियंवदस्य अजं प्रति गन्धर्वास्त्रप्रदानम्<br>• भोजेन अजं प्रति कृतं स्वागतम्, प्रातःकाले बन्दिकृतैः स्तुतिपाठैः अजस्य निद्राभङ्गता | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-** रघोः पराक्रमस्य अवबोधनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनतरं छात्राः-<br>1. पद्यसाहित्यपरिज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br>2. राज्ञः उदारराजस्य चरितं अवगमिष्यन्ति।<br>3. शिष्यस्य कौत्सस्य चरितं ज्ञात्वा आत्मनः चरित्रनिर्माणे प्रेरणां प्राप्स्यन्ति।<br>4. भारतीयसंस्कृत्यनुगुण-अतिथिसत्कारस्य महत्त्वं | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | ज्ञास्यन्ति।<br>पाठ्यग्रन्थः-कालिदासविरचितं रघुवंशमहाकाव्यम् (चतुर्थ-पञ्चमसर्गौ)<br><br>सहायकग्रन्थः-1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी. 2001<br><br>2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br><br>परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>आन्तरिकमूल्याङ्कनम्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्री द्वितीय वर्षम् | तृतीयम् | DSE-2 | **शकुन्तलायाः पतिगृहप्रस्थानम्** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. दुष्यन्तस्य कण्वाश्रमप्रवेशः**<br>• महाकविकालिदासस्य परिचयः<br>• नान्दीपाठः प्रस्तावना च<br>• कण्वाश्रमवर्णनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. शकुन्तलादर्शनेन दुष्यन्तस्य मनोभावाः**<br>• शकुन्तलादर्शनेन दुष्यन्तस्य मनोभावाः<br>• मृगयाविनोदस्य स्थानम्<br>• दुष्यन्तेन कृतं शकुन्तलावर्णनम्<br>• दुष्यन्तमाढव्यसंवादः | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. दुष्यन्तं प्रति अनुरक्तायाः शकुन्तलायाः मनोभावाः**<br>• शकुन्तलायाः मनोभावाः<br>• पौरवाणां वैशिष्ट्यम्<br>• राजशकुन्तलयोः समागमः<br>• शकुन्तलायाः सौन्दर्यवर्णनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. शकुन्तलायाः सौप्रस्थानिकम्**<br>• शकुन्तलासौप्रस्थानिकनिर्णयः<br>• कण्वस्य पुत्रीविषयकं वात्सल्यम्<br>• आश्रमवासिनां विरहावस्था<br>• आश्रमवासिनां प्रकृतिप्रेम<br>• गृहिणीधर्मोपदेशः<br>• शकुन्तलायाः सुप्रस्थानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्- कालिदाससम्मतराजादिधर्मस्य अवबोधनम्।<br>परिणामः- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. आश्रमस्य शान्तं पवित्रञ्च वातावरणं ज्ञास्यन्ति।<br>2. दुष्यन्तशकुन्तलयोः सहजानुरागं ज्ञास्यन्ति।<br>3. गृहिणीधर्मान् ज्ञास्यन्ति।<br>4. मैत्र्याः महत्त्वं ज्ञास्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थः- 1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमाङ्कात् चतुर्थाङ्कपर्यन्तम्) कालिदासः, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | संस्कृत | राघवभट्टः, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, 2016<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,200<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>3.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-तृतीयवर्षम् | पञ्चमम् | DSE-3 | काव्यशास्त्रे निरूपिताः पदार्थाः | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. काव्यस्वरूपम्<br>• काव्यस्य प्रयोजनम्<br>• काव्यस्य लक्षणम्<br>• काव्यस्य भेदाः<br>➢ काव्यस्य ध्वन्यादयः त्रयो भेदाः<br>➢ काव्यस्य भेदद्वयम्-दृश्यं श्रव्यं च<br>➢ काव्यभेदोदाहरणानि | 1 | | 16+04 |
| | | | 1. शब्दस्वरूपम्<br>• वाक्यस्वरूपम्<br>• शब्दभेदाः<br>➢ वाचकः<br>➢ लाक्षणिकः<br>➢ व्यञ्जकः<br>• शब्दशक्तयः<br>➢ अभिधा<br>➢ लक्षणा<br>➢ व्यञ्जना | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. काव्यदोषाः<br>• दोषस्वरूपम्<br>• दोषभेदाः<br>➢ पददोषाः<br>➢ वाक्यमात्रदोषाः<br>➢ अर्थदोषाः<br>➢ रसदोषाः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. रीति-गुणालंकाराः<br>• रीतिः<br>➢ रीतिस्वरूपम्<br>➢ रीतेस्तिस्रो भेदाः<br>• गुणः | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | ➢ गुणस्वरूपम्<br>➢ गुणस्य त्रयो भेदाः<br>• अलंकारः<br>➢ अलंकारस्वरूपम्<br>➢ शब्दालंकाराः<br>➢ अर्थालंकाराः<br>(स्वभावोक्तिः, उपमा,रूपकम्, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेकः, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, दृष्टान्तः, तुल्ययोगिता, दीपकम्,अर्थान्तरन्यासः, सन्देहः, भ्रान्तिमान्, काव्यलिङ्गम्, समासोक्तिः, अप्रस्तुतप्रशंसा, विभावना, विशेषोक्तिः, विरोधः, विषमम्, असंगतिः)<br><br>**उद्देश्यम्-**<br>काव्यशास्त्रीयतत्त्वानां सामान्येन अबोधनम्।<br><br>**परिणामः-**<br><br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br><br>1. काव्यशास्त्रीयाणि तत्त्वानि सामान्येन बोधयितुं शक्ष्यन्ति।<br>2. साहित्येतरशास्त्रेषु स्थितानि काव्यशास्त्रीयाणि तत्त्वानि गवेषयितुं समर्था भविष्यन्ति।<br>पाठ्याग्रन्थः-काव्यदीपिका (श्रीकान्तिचन्द्रभट्टाचार्यः, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,2020)<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |
| | | | | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रीप्रथम वर्षम् | प्रथमम् | GE-1 | **रामस्य राजधर्मनिर्वाहः** | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **महाकविकालिदासः तद्ग्रन्थाश्च**<br>• कालिदासः<br>• रघुवंशमहाकाव्यस्य परिचयः<br>• कालिदासेन रचितानि अन्यानि काव्यानि<br>• भौगोलिकवर्णनम्<br>(समुद्रः, जनस्थानम्, माल्यवान् पर्वतः, पम्पासरोवरः) | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **नद्यादिवर्णनम्**<br>• गोदावरी, पञ्चवटी, अगस्त्याश्रमः, सुतीक्ष्णाश्रमः<br>• चित्रकूटपर्वतः, मन्दाकिनी, त्रिवेणीसंगमः<br>• रामस्यायोध्योपवने वासः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **सीतानिर्वासनम्**<br>• रामस्य राज्याभिषेकः<br>• रामेण जननीप्रभृतीनां सान्त्वनं चित्रमात्रशेषस्य पितुर्निकेते प्रवेशश्च<br>• सीतया गर्भस्य धारणम्<br>• रामेण सीताविषयकस्य लोकापवादस्य श्रवणं निर्वासनस्य निश्चयश्च | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. **वाल्मीकिना सीतायाः स्वाश्रमं प्रति नयनम्**<br>• रामादेशस्य श्रवणेन सीतायाः करुणा दशा<br>• सीताया रामं प्रति संदेशः<br>• विलपन्त्याः सीतायाः समीपं कारुणिकस्य वाल्मीकेरागमनं स्वाश्रमं प्रति नयनं च | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्:- रघुवंशे वर्णितरीत्या भौगोलिकस्थानानां परिचयप्रदानम्।<br>सीतापरित्यागस्य परिचयप्रदानम्।<br><br>**परिणामः-**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. प्राचीनभारतस्य | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | भौगोलिकस्थानानां परिचयं प्राप्स्यन्ति।<br>2. करुणरसास्वादनदृष्ट्या सीतापरित्यागं समीक्षितुं शक्ष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**- रघुवंशम् (त्रयोदश-चतुर्दशसर्गौ), महाकविकालिदासः, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी- 221001<br>**सहायकग्रन्थः**-<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-221001<br>2. संकृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, 2001<br>3.कालिदास ग्रन्थावली, कालिदास, ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, पण्डित रामतेजशास्त्री, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,2019<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रथमवर्षम् | द्वितीयम् | GE 2 | अलङ्काराः (जयदेवमतानुसारेण) | | 4 | 16+4 |
| | | | 1. अलङ्कारसामान्यपरिचयः<br>• काव्ये अलङ्काराणां स्थानम्<br>• जयदेवस्य परिचयः<br>• अलङ्कारलक्षणम्<br>• शब्दालङ्कारः अर्थालङ्कारश्च | 1 | | |
| | | | 2. अलङ्काराः -१<br>• अनुप्रासः, अनुप्रासभेदाः<br>• यमकम्, उपमा, रूपकम्, परिणामः<br>• उल्लेखः, अपह्नुतिः, उत्प्रेक्षा,<br>• अनुमानम्, भ्रान्तिमान्, सन्देहः | 1 | | 16+4 |
| | | | 3. अलङ्काराः -२<br>• काव्यलिङ्गः, तुल्ययोगिता, परिकरः,<br>• दीपकम् प्रतिवस्तूपमा, दृष्टान्तः,<br>• निदर्शना, व्यतिरेकः, समासोक्तिः,<br>• भङ्गश्लेषः, अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यासः | 1 | | 16+4 |
| | | | 4. अलङ्काराः -३<br>• व्याजस्तुतिः,विरोधः, विभावना<br>• विशेषोक्तिः, सारः, परिवृत्तिः<br>• परिसङ्ख्या, समुच्चयः,तद्गुणः<br>• व्याजोक्तिः, वक्रोक्तिः, स्वभावोक्तिः | 1 | | 16+4 |
| | | | **उद्देश्यम्-**<br>जयदेवेन निरूपितानाम् अलङ्काराणां परिचयप्रदानम्।<br>**परिणामः-**<br>1) छात्राः निर्दिष्टानाम् अलङ्काराणां परिचयं प्राप्स्यन्ति।<br>2) विभिन्नप्रतियोगितासु निर्दिषटपाठ्यक्रमे एतान् अलङ्कारान् प्रत्यभिज्ञास्यन्ति।<br>3) काव्येषु एतान् अलङ्कारान् समीक्षितुं शक्ष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः** – चन्द्रालोकः (पञ्चममयूखः) व्या. डा. श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, के. 37/117 गोपालमन्दिर लेन पो.बा.नं. 1129, वाराणसी-221001, 2016<br>**सहायकग्रन्थः** – 1.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा.राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>2.साहित्यदर्पणःविश्वनाथः ,, आचार्यलोकमणिदहालः, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम् -, वाराणसी, 2008<br>3.अलंकारकोशःब्रह्ममित्रअवस्थी.डा ,, इन्दुप्रकाशनम्, दिल्ली, 1989 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रीद्वितीयवर्षम् | तृतीयम् | GE-3 | **किरातार्जुनीयमहाकाव्ये राजनैतिका विचाराः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. गुप्तचरस्य धर्मः**<br>• महाकविभारवेः परिचयः<br>• किरातार्जुनीयस्य कथासारः<br>➢ वनेचरस्य युधिष्ठिरं हस्तिनापुरात् प्रत्यागमनम्<br>➢ युधिष्ठिरहितैषिणो वनेचरस्य सत्यवादिता<br>➢ वनेचरस्य वाचो गुणः | 1 | | 16+04 |
| | | | ➢ गुप्तचरस्य धर्मः<br>• दुर्योधनस्य राजनीतिः<br>➢ सर्वसम्पदां प्राप्तेः कारणम्<br>➢ राजनीतिर्दुर्बोधा<br>➢ दुर्योधनस्य नयेन जगतीं जिगीषा<br>➢ अनार्यसङ्गमात् महात्मविरोधोऽपि वरम् | | | 16+04 |
| | | | ➢ दुर्योधनस्य सखिप्रभृतीन् प्रति व्यवहारः<br>➢ दुर्योधनेन महौजसां स्ववशे स्थापनम् | | | 16+04 |
| | | | ➢ दुर्योधनशासने प्रजानां स्थितिः<br>➢ गुप्तचरादिनियुक्तिः<br>➢ राजनीतेः साफल्यम्<br>➢ युधिष्ठिरेण सत्कृतस्य वनेचरस्य गमनम्<br>**2. द्रौपद्योपदिष्टं विजयार्थिनां राज्ञां कर्तव्यम्**<br>• युधिष्ठिरोपालम्भः<br>• मायाविषु मायाविभिर्भाव्यम् | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | • पराक्रमवतः पराभवः अप्युत्सवः<br>• शमो मुनीनां सिद्धेः कारणम्, न तु राज्ञाम्<br>• विजयार्थिभिः सन्धिर्न पालनीयः<br>**3. युधिष्ठिरेण भीमस्य प्रसादनम्**<br>• द्रौपद्या वाचो गुणाः<br>• सकोपस्य भीमस्य युधिष्ठिरं प्रत्युपालम्भः<br>• द्रौपदीमतं समर्थयमानेन भीमेन युधिष्ठिरं प्रति पराक्रमाय प्रेरणम्<br>• युधिष्ठिरेण सकोपस्य भीमस्य प्रसादनम् प्रशमस्य माहात्म्यं च<br>➢ भीमस्य वाचो गुणाः<br>➢ अविचार्य किमपि न कर्तव्यम्<br>➢ प्रशमस्य प्रभावः<br>➢ असदाचारेण लभ्यो जयः पराजय एव<br>➢ जिगीषुभिः क्रोधो जेयः<br>➢ श्रियो बहुच्छलाः<br>➢ तितिक्षासमं जयसाधनं नास्ति<br>➢ इदानीं पराक्रमस्य नावसरः<br>➢ मदः अनर्थहेतुः<br>➢ अणुरपि प्रकृतिप्रकोपजो विग्रहः सकलं निहन्ति<br>➢ मतिमता अविनयस्य द्विषः समुन्नतिरुपेक्षणीया<br>➢ भगवतो व्यासस्यागमनम्<br><br>**उद्देश्यम्:-** काव्येषु वर्णितस्य राजनैतिकविचारस्य बोधनम्<br>**परिणाम:-**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादन्तरं छात्राः-<br>1. गुप्तचरस्य कर्तव्यं ज्ञास्यन्ति।<br>2. दुर्योधनस्य कुटिलराजनीतिं ज्ञास्यन्ति।<br>3. द्रौपद्याः वचने कर्तव्यतत्परतां ज्ञास्यन्ति।<br>4. शमादिगुणं ज्ञातुं प्रभविष्यन्ति। | 1<br>1 | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **पाठ्यग्रन्थ:**-किरातार्जुनीयम् (प्रथम-द्वितीयसर्गौ), महाकविभारवि, मल्लिनाथ, पण्डितदुर्गाप्रसाद एवं काशिनाथ पाण्डुरंग परब,चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली,2010<br>**सहायकग्रन्थः**-<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, बाराणसी-221001<br>2. संकृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, 2001<br>3.कालिदास ग्रन्थावली, कालिदास, ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, पण्डित रामतेजशास्त्री, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,2019<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्री द्वितीय वर्षम् | चतुर्थम् | GE-4 | नाटिकापरम्परा रत्नावली च<br>**1.** नाटिकापरम्परा<br>● नाटिकायाः स्वरूपम्<br>● उपलब्धा नाटिकाः<br>● रत्नावलीकारस्य श्रीहर्षस्य परिचयः<br>● नान्दी<br>➢ नान्द्याः स्वरूपम्<br>➢ रत्नावल्यां नान्दी<br>● प्रस्तावना<br>➢ प्रस्तावनायाः स्वरूपम्<br>➢ रत्नावल्यां प्रस्तावना<br>● विष्कम्भकः<br>➢ विष्कम्भकस्य स्वरूपम्<br>➢ रत्नावल्यां विष्कम्भकः<br>● मदनमहोत्सवः<br>➢ राज्ञा विदूषकेण च मदनमहोत्सववर्णनम्<br>➢ द्विपदीखण्डं गायन्तीभ्यां चेटीभ्यां विदूषकस्य क्रीडा<br>➢ चेटीभ्यां राजानं प्रति मदनपूजाविषयकस्य वासवदत्तासंदेशस्य निवेदनम्<br>➢ राज्ञो विदूषकेण सह मकरन्दोद्याने प्रवेशः<br>➢ मकरन्दोद्यानरामणीयकम्<br>➢ वास्वदत्तायाः काञ्चनमालया सागरिकया परिवारेण च सह मदनर्चनाय प्रवेशः<br>➢ वासवदत्तया सारिकारक्षण-व्याजेन सागरिकाया विसर्जनम्,मदनरूपस्य राज्ञः पूजनम्, किन्तु तत्रैव स्थितया सागरिकया अपि मदनभ्रान्त्या राज्ञः पुष्पैः समर्चनं च<br>➢ वैतालिकवचनेन राजनि मदनभ्रमे निवृत्ते सागरिकाया राजानं प्रत्युरागः<br>➢ सायंसन्ध्या<br>**2.** कदलीगृहवृत्तान्तः<br>● प्रवेशकः<br>➢ प्रवेशकस्य लक्षणम्<br>➢ सागरिकायाः कदलीगृहे प्रवेशः<br>● सागरिकया राज्ञश्चित्रस्य निर्माणं विरहव्याथातिशयेन तस्या मूर्छा च<br>● सागरिकायाः सुसंगतया सह कदलीगृहान्निष्क्रणं | 1<br>1 | 4 | 64+16<br>16+4<br>16+4 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | वानरेण<br>• कदलीगृहे राज्ञ उदयनस्य सागरिकया समागमः, वासवदत्तागमनशङ्कया सागरिकायाः ततो निष्क्रमणं च।<br>• चित्रलके राज्ञा सह सागरिकायाश्चित्रं विलोकितवत्या वासवदत्तायाः कोपः | 1 | | 16+4 |
| | | | 3. **वासवदत्तावेषया सागरिकया राज्ञः समागमः**<br>• सुसंगताया विदूषकस्य च पुनः राज्ञा सागरिका-समागमस्य गुप्तयोजना<br>• वासवदत्तावेषया सागरिकया समागमायोत्सुकस्य राज्ञो विदूषकेण सह चित्रशालिकाद्वारे प्रवेशः<br>• वासवदत्तायाः पुनःकोपो राज्ञः सागरिकाहेतुको विषादश्च<br>• वासवदत्तावेषया सागरिकया राज्ञः समागमः, वासवदत्तायाः पुनः कोपः, प्रसादनाय राज्ञो गमनं च | 1 | | 16+4 |
| | | | 4. **रत्नमालाया अधिगमः**<br>• विदूषकेण राज्ञो हस्ते रत्नमालायाः समर्पणम्<br>• सेनापते रुमण्वतो विजयो राज्ञो यौगन्धरायणे प्रसादश्च<br>• ऐन्द्रजालिकवृत्तान्तः, सागरिकाया रत्नावल्या देवीपदप्राप्तिः, भरतवाक्यं च<br><br>**उद्देश्यम्:-** नाटिकापरम्परयाः रत्नावलीनाटियाः च अवबोधनम्<br>**परिणामः-**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादन्तरं छात्राः<br>1. नाटिकापरम्परां ज्ञास्यन्ति।<br>2. वासवदत्तायाः राजनि स्थितम् अनुरागं ज्ञास्यन्ति।<br>3. रत्नावल्याः संविधानकं ज्ञास्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थः- रत्नावलीनाटिका<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-221001<br>2. संकृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, 2001<br>3.कालिदास ग्रन्थावली, कालिदास, ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, पण्डित रामतेजशास्त्री, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,2019<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रितृतीय वर्षम् | पञ्चमः | GE 5 | **ऐतिहासिकगद्यसाहित्यम् – हर्षवर्धनस्य हूणविजययात्रा** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. गद्यसाहित्यपरम्परा**<br>• प्राचीनकथासाहित्यम्(वासवदत्ता, कादम्बरी)<br>• प्राचीन-आख्यायिकासाहित्यम् (दशकुमारचरितम्, हर्षचरितम्<br>• बाणभट्टस्य परिचयः<br>• हर्षचरिते रचनाशैली | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. विजयार्थं राज्यवर्धन-हर्षवर्धनयोः प्रयाणम्**<br>• हूणान् जेतुं राज्यवर्धन-हर्षवर्धनयोः प्रयाणम्<br>• हर्षवर्धनस्य दुःस्वप्नदर्शनम्<br>• हर्षवर्धनस्य राजधानीं प्रति प्रत्यागमनम्<br>• रुग्णस्य पितुः दर्शनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. राजधान्याम् अशुभसूचनम्**<br>• महाराजस्य शुश्रूषा<br>• प्रभाकरवर्धनस्य पुत्रवात्सल्यम्<br>• राज्ञ्या महासतीव्रताचरणम्<br>• यशोमत्याः प्रतिज्ञा | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. प्रासादे विपत्परम्परा**<br>• हर्षवर्धनं प्रति प्रभाकरवर्धनस्य धैर्याश्वासनम्<br>• प्रभाकरवर्धनस्य लोकान्तरगमनम्<br>• हर्षवर्धनस्य शोकः<br>• सम्बन्धिनां राजवल्लभानाम् अवस्था | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-:** हर्षवर्धनकालिकस्य इतिहासस्य परिज्ञापनम्।<br>**परिणाम -:**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1) प्रजासु राज्ञः प्रीतिः कथमासीत् इति ज्ञास्यन्ति।<br>2) प्राचीनचिकित्सापद्धतिं ज्ञास्यन्ति।<br>3) हर्षचरिताधारेण पुत्रवात्सल्यम् इति विषयं वक्तुं प्रभविष्यन्ति।<br>4) संस्कृते गद्यरचनासौन्दर्यं ज्ञातुं शक्ष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थ -:** महाकविबाणभट्टविरचितं हर्षचरितम्, हिन्दी व्या. जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, चौक, पो.बा.न.1069, वाराणसी-221001<br>**सहायकग्रन्थः** .1-संस्कृत साहित्य का इतिहास ,उमाशंकर ऋषि , चौखम्भा भारती अकादमी2001-वाराणसी ,<br>.2संकृत साहित्य का इतिहासशारदा निकेतन ,आचार्य बलदेव उपाध्याय , 20 ,वाराणसी02<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**1-. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि ,2एकेन वाक्येन . 3 उत्तरलेखनम्. लघुत्तरीयप्रश्नाः ,4दीर्घोत्तरप्रश्नाः1 .<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम् -1 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्.2 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्. 3 ,पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्.4 ,लघुनाटकाभिनयः.5 . | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | . | ,शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्6वाग्वर्धिनीसभायाम् .<br>।अधीतिविषयप्रस्तुतिः | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्री तृतीय वर्षम् | षष्ठम् | GE-6 | अनूदितसाहित्ये लावण्यमयी | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. अनुवादसाहित्यस्य परम्परा<br>• गुणाढ्यस्य बृहत्कथा, सोमदेवस्य कथासरित्सागरः<br>• विष्णुशर्मणः पञ्चतन्त्रम्, क्षेमेन्द्रस्य बृहत्कथामञ्जरी, दण्डिनः दशकुमारचरितम्<br>• जगन्नाथपाठकस्य गालिबकाव्यम्, आचार्यगोविन्दचन्द्रपाण्डेयस्य अस्ताचलीयम्<br>• अनूदितसाहित्यस्य आवश्यकता | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. लावण्यमयी इतिकथाकाव्यम्<br>• मूलकविः बङ्किमचन्द्रचटर्जी, अनुवादकः अप्पाशास्त्री<br>• लावण्यमयीकथांशः<br>• सुधाकरस्य जन्मवृत्तान्तः,<br>• सुधाकरलावण्यमय्योः आलापः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. सुधाकरलावण्यमय्योः भाग्योदयः<br>• सरलादेव्याः अनुचिन्ता<br>• सुधाकरलावण्यमय्योः मिथः आलापः<br>• लावण्यमय्याः सुधाकरेण कृतं कण्टकाद्वस्त्रविमोचनम्<br>• तापसी-योगिन्योः आलापः<br>• योगिनीयोगीन्द्रयोः दुरवस्था | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. सुधाकरलावण्यमय्योः समागमः<br>• सुधाकरलावण्यमय्योः प्रीतिः विवाहयाचनञ्च<br>• सुधाकरलावण्यवत्योः परिणयः<br>• ग्रामाधिपस्य वाराणसीगमनम्<br>• रमेशचन्द्रस्य सरलादेव्या सह मुक्तपुरीगमनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्:-**<br>भाषान्तररचनारीतेः अवगमनम्।<br>अनूदितकथायाः लावण्यमयी इत्यस्याः रचनासौन्दर्यप्रतिपादनम्।<br>**परिणामः-**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. अनुवादसाहित्यपरम्परां परिचेष्यन्ति। | | | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2. लावण्यमयीगद्यस्य परिचयं प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थ:-** लावण्यमयी (प्रकाशिता)<br>**सहायकग्रन्था**:-1.साहित्य और अनुवाद प्रक्रिया सम्पादक: डा. नरेश सिहाग, गीना प्रकाशन 202 पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 हरियाणा<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धति**:-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रतिष्ठा चतुर्थ वर्षम् | सप्तमम् | DSCC16 | | | 4 | 64+16 |
| | | | नाट्यसङ्ग्रहस्य परिचयः<br>1. मुनीनां प्रश्नः<br>• मुनीनां पञ्चप्रश्नाः<br>• भरतस्य प्रश्नानाम् उत्तरप्रदानम्<br>• निघण्टु, निरुक्तम्, रससंख्या<br>• भावानां संख्या | 1 | | 16+4 |
| | | | 2. रसादयः<br>• नव रसाः<br>• अष्ट स्थायिभावाः<br>• ३३ व्यभिचारिणो भावाः<br>• अष्टौ सात्त्विकाः भावाः<br>• चतुर्विधाः अभिनयाः | 1 | | 16+4 |
| | | | 3. आतोद्यादिः<br>• चतुर्विधम् आतोद्यम्<br>• पञ्चविधं गानम्<br>• त्रिविधः रङ्गमण्डपः<br>• रससूत्रम् | 1 | | 16+4 |
| | | | 4. रसविवेचनम्<br>• रससूत्रविचारः<br>• शृङ्गारहास्यकरुणरौद्ररसानां लक्षणानि<br>• वीरभयानकबीभत्स-अद्भुतरसानां लक्षणानि।<br>• शृङ्गारादीनाम् अवान्तरभेदः शान्तरसविचारश्च<br>उद्देश्यम्:- नाट्यशास्त्रीयतत्त्वानां रसभावादीनां बोधनम्<br>परिणामः-<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. रसस्वरूपं ज्ञास्यन्ति।<br>2. रसानां भेदान् उपभेदान् च ज्ञास्यन्ति।<br>3. शान्तरसविषये भरतमुनेः मतम् अवगमिष्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थः:- भरतमुनिविरचितं नाट्यशास्त्रम्- षष्ठः अध्यायः, अभिनवभारतीसहितः।<br>सहायकग्रन्थः:-1. काव्यात्ममीमांसा, डा. जयमन्तमिश्रः, | 1 | | 16+4 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | चौ.वि.भा. वाराणसी, 2005<br>2.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ<br>3.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>आन्तरिकमूल्याङ्कनम्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रतिष्ठा चतुर्थवर्षम् | सप्तमम् | DSCC17 | रीतिसम्प्रदायः वामनश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. अलङ्कारशास्त्रपरम्परा<br>• अलङ्कारशास्त्रपरिचयः<br>• अलङ्कारस्योपयोगिता<br>• वामनस्य शास्त्रवैदग्ध्यम्<br>• वामनस्य काव्यपर्यालोचनसम्प्रदायः, काव्यालङ्कारसूत्रस्य वैशिष्ट्यञ्च | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. रीतिनिश्चयादिः<br>• प्रयोजनस्थापना<br>• अधिकारिचिन्ता<br>• रीतिनिश्चयः<br>• काव्याङ्गानि, काव्यविशेषश्च<br>(प्रणम्य परमं ज्योतिः इत्यारभ्य ततोऽन्यभेदक्लृप्तिः इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. दोषाधिकरणम्<br>• दोषदर्शनम्<br>• पददोषः<br>• पदार्थदोषः<br>• वाक्यदोषः, वाक्यार्थदोषश्च<br>( गुणविपर्ययात्मानो दोषाः इत्यारभ्य कलाचतुर्वर्गशास्त्रविरुद्धार्थानि इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. गुणविवेचनम्<br>• गुणविवेचनम्<br>• अलङ्कारविवेचनम्<br>• शब्दगुणविवेचनम्<br>• अर्थगुणविवेचनम्<br>(काव्यशोभायाः कर्तारो इत्यारभ्य दीप्तरसत्वं कान्तिः इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्:-** रीतिसम्प्रदायस्य अवबोधनम् | | | |
| | | | **परिणामः-**<br>1. अस्य पाठ्यग्रन्थस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः- दोषगुणालङ्कारान् ज्ञास्यन्ति।<br>2. काव्यनिर्माणे प्रेरणां प्राप्स्यन्ति। | | | |
| | | | **पाठ्यग्रन्थः:-** काव्यालंकारसूत्राणि (प्रथमाधिकरणात् तृतीयाधिकरणान्तं यावत्) वामनः, श्रीगोपेन्द्रत्रिपुरहरभूपालः, चौखम्बासंस्कृत- सुरभारती प्रकाशनम्, वाराणसी, 2001 | | | |
| | | | **सहायकग्रन्थः:-** 1.काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005<br>2.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 3.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>4.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रतिष्ठा चतुर्थवर्षम् | सप्तमम् | DSCC18 | गौतमबुद्धस्य चरितम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. अश्वघोषस्य परिचयः कथावस्तु च<br>• कविपरिचयः<br>• बुद्धस्य चरित्रम्<br>• अश्वघोषस्य कवित्वम्<br>• बुद्धचरितस्य वैशिष्ट्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. शुद्धोदनस्य चरितम्<br>• शुद्धोदन जीवितम्<br>• प्रजानां रोगशान्तिः<br>• लोकनायकस्य जन्म<br>• राजसुतदर्शनम्<br>(इक्ष्वाकुवंशार्णव-१.१ इत्यारभ्य इति नरपतिपुत्रजन्म १.८९ इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. अन्तःपुरविहारः<br>• अन्तःपुरसौन्दर्यम्<br>• धर्मकामाः क्रियाः, पापविनाशः<br>• स्वकुलानुरूपविद्याग्रहणम्, शस्त्रत्यागः शास्त्रविमर्शश्च<br>• अलङ्कारादिपर्यालोचनम्<br>( आजन्मनो जन्मजरान्तकस्य २.१ इत्यारभ्य वनमनुपमसत्त्वा २.५६ इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. गौतमस्य नगरभ्रमणम्<br>• संवेगोत्पत्तिः<br>• राजपथशोभा<br>• नारीवर्णनम् ,प्रजानां रोगभयम्<br>(ततः कदाचिन्मृदुशाद्वलानि ३.१ इत्यारभ्य ततः शिवं कुसुमित-३.६४ इति पर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्- बुद्धचरितानुसारेण गौतमबुद्धस्य चारित्रिकवैशिष्ट्यस्य अवबोधनम्।<br><br>परिणामः<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्यनादनन्तरं छात्राः-<br>1. अश्वघोषस्य रचनाशैलीं ज्ञास्यन्ति।<br>2. गौतमस्य लौकिकजीवने विद्यमानं विरक्तिभावं ज्ञास्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थः-1. अश्वघोषविरचितं बुद्धचरितम् (आदितः तृतीयसर्ग यावत्), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2017<br><br>सहायकग्रन्थः-<br>1.संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,2007 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कन विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रिप्रतिष्ठा चतुर्थवर्षम् | सप्तम् | DSCC19 | **राष्ट्रस्य एकतायां चाणक्यस्य अवदानम्** | | 4 | 64+16 |
| | | | **१. चन्द्रगुप्तस्य राज्यलाभः**<br>• कवि-कृतिपरिचयः<br>• मुद्राराक्षसस्य मङ्गलाचरणं प्रस्तावना च<br>• मुद्रिकाप्राप्तिः<br>• कूटपत्रलेखनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **२. चन्द्रगुप्तहननोपायः**<br>• आभरणप्रेषणम्<br>• चन्द्रगुप्तवधार्थं राक्षसकृतः उपायः<br>• कुसुमपुरे गुप्तचराणां वधः<br>• चन्द्रगुप्तम् उत्तेजयितुं राक्षसस्य योजना | 1 | | 16+04 |
| | | | **३. चाणक्यचन्द्रगुप्तयोः मतविरोधः**<br>• कृतककौमुदीमहोत्सवप्रसङ्गः<br>• वैतालिकयोः स्तुतिपाठः<br>• चाणक्यचन्द्रगुप्तयोः मतभेदः<br>• चाणक्यं प्रति चन्द्रगुप्तस्य अनादरः | 1 | | 16+04 |
| | | | **४. चाणक्यस्य साफल्ये राक्षसस्य चिन्ता**<br>• गुप्तचरात् कुसुमपुरवृत्तान्तश्रवणम्<br>• राक्षसमलयकेत्वोः आलापः<br>• चन्द्रगुप्तसाफल्यप्रकाशनम्<br>• क्षपणकेन सह राक्षसस्य आलोचना | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-:** मुद्राराक्षसनाटकस्य राष्ट्रभक्तेश्च अवबोधनम्<br>**परिणाम-:**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. कूटनीतिविषयं ज्ञास्यन्ति।<br>2. तात्कालिकसमाजस्य स्थितिविषये ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br>3. कूटनीतिविषयः रूपकमाध्यमेन कथं प्रकाश्यते इति विषयेऽपि अवधारणां प्राप्स्यन्ति।<br>4. प्रधानामत्यस्य चाणक्यस्य बुद्धिसामर्थ्यं ज्ञास्यन्ति ।<br>**पाठ्यग्रन्थः-**<br>मुद्राराक्षसम् (१-४ अङ्काः),विशाखदत्तकृतम्,परमेश्वरदीनपाण्डेय, चौखम्बासुरभारतीप्रकाशनम् -, वाराणसी, 2020<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>.1संस्कृत साहित्य का इतिहासचौखम्भा भारती ,उमाशंकर ऋषि , 221001-वाराणसी .अकादमी<br>.2संकृत साहित्य का इतिहासशारदा ,आचार्य बलदेव उपाध्याय , 2001 ,निकेतन वाराणसी | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | कालिदास<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमविवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि प्रतिष्ठा चतुर्थं वर्षम् | अष्टमम् | DSCC20 | रुय्यकसम्मता अलङ्काराः<br>1. रुय्यकः, तेन सूचितानि प्रस्थानानि<br>• रुय्यकस्य परिचयः<br>• सूचितानि प्रस्थानानि-<br>➢ ध्वनिसिद्धान्तस्थापनम्<br>➢ भामहोद्भटादिमतालोचनम्<br>➢ रुद्रटाभिमतभावालंकारालोचनम्<br>➢ वामनमतालोचनम्<br>➢ कुन्तकमतालोचनम्<br>➢ भट्टनायकमतालोचनम्<br>➢ व्यक्तिविवेककारमतालोचनम्<br>➢ ध्वनिसिद्धान्तः<br>➢ काव्यस्य त्रयो भेदाः | 1 | 4 | 16 + 4 |
| | | | 2. शब्दालंकाराः<br>• पौनरुक्त्यस्य त्रयः प्रकाराः<br>• पुनरुक्तवदाभासः<br>• अनुप्रासः<br>• यमकम्<br>• प्ररूढस्य शब्दार्थपौनरुक्त्यस्य दोषत्वम्<br>• चित्रालंकारः | 1 | | |
| | | | 3. उपमादयः सप्तार्थालंकाराः<br>• उपमा<br>• रूपकम्<br>• अनन्वयः<br>• उपमेयोपमा<br>• स्मरणम्<br>• रूपकम्<br>• परिणामः | 1 | | |
| | | | 4. सन्देहादयोष्टावर्थालंकाराः<br>• सन्देहः<br>• भ्रान्तिमान्<br>• उल्लेखः<br>• अपह्नुतिः<br>• उत्प्रेक्षा<br>• अतिशयोक्तिः<br>• तुल्ययोगिता | 1 | | |

- दीपकम्
- प्रतिवस्तूपमा
- दृष्टान्तः
- निदर्शना
- व्यतिरेकः
- सहोक्तिः
- विनोक्तिः
- समासोक्तिः

**उद्देश्यम्**:- रुय्यकसम्मतानाम् अलङ्काराणां अवबोधनम्

**परिणामः-**

अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-

1. निर्दिष्टानाम् अलङ्काराणां विषये रुय्यकस्य मतं ज्ञास्यन्ति।
2. विभिन्नकाव्येषु अलङ्काराणां परिशीलनं कर्तुं प्रभविष्यन्ति।

**पाठ्यग्रन्थः**-अलंकारसर्वस्वम् (निर्धारिताः विषयाः) रुय्यकः,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी-2016

**सहायकग्रन्थः-**

1. काव्यात्ममीमांसा. डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी. 2005
2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास. दिल्ली, 2007
3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988
4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967

**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।

**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धः | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि प्रतिष्ठा चतुर्थ वर्षम् | अष्टम. | DSCC21 | मुकुलभट्टसम्मता अभिधावृत्तिः<br>१. मुख्यः लाक्षणिकः च व्यापारः<br>• मुकुलभट्टस्य परिचयः<br>• मुख्यलाक्षणिकयोः अभिधाव्यापारयोः विवेकः<br>• मुख्यव्यापारस्य भेदचतुष्टयम्<br>• लक्षणा द्विविधा मता<br>२. तटस्थलक्षणा<br>• शुद्धालक्षनायाः भेदाः<br>• उपादानलक्षनायाः भेदाः<br>• लक्षणा षड्विधा<br>• निरूढा लक्षणा<br>३. लक्षणायां विशेषांशाः<br>• त्याज्या लक्षणा<br>• वक्तृनिबन्धनत्वेन लाक्षणिकः अर्थः<br>• लक्षणाविचारः<br>• वाक्यगतरूपविशेषपर्यालोचनया लाक्षणिकः अर्थः<br>४. अभिधासम्बन्धेन लक्षणायाः विभागः<br>• वाच्यनिबन्धना लक्षणा<br>• अभिहितान्वयवाद-अन्विताभिधानयोः लक्षणान्तर्भावः<br>• अखण्डवाक्यार्थवादः<br>• अभिधेयेन सम्बन्धात् इत्यादिना लक्षणा पञ्चधा मता<br>**उद्देश्यम्-:** मुकुलभट्टसम्मतस्य अभिधाविषयकसिद्धान्तस्य अवबोधनम्<br>**परिणाम-:**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्त्रं छात्राः-<br>1) साहित्ये अभिधायाः महत्त्वं ज्ञास्यन्ति।<br>2) अभिधायाः चातुर्विध्यं ज्ञास्यन्ति।<br>3) लक्षणायाः षड्भेदान् ज्ञास्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थ -:** मुकुलभट्टकृता अभिधावृत्तिमातृका सम्पूर्णा डा.रेवाप्रसाद द्विवेदी. चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी,-1995<br><br>**सहायकग्रन्थः** -1.काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005<br>2.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी,काणे-वी. डा,ईश्वरचन्द्रशास्त्री. मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | 1<br>1<br>1<br>1 | 4 | 64+16<br>16+4<br>16+4<br>16+4<br>16+4 |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रतिष्ठा चतुर्थ वर्षम् | अष्टमम् | DSCC23 | अर्वाचीननाटकसाहित्यम्<br>1. श्रीरामकृष्णनरेन्द्रयोः मेलनम्<br>• कविपरिचयः<br>• प्रस्तावना<br>• सुरेन्द्रनाथेन नरेन्द्रस्य आनयनम्<br>• श्रीरामकृष्णेन सह मेलनम् | 1 | 4 | 64+16<br>16+4 |
| | | | 2. दक्षिणेश्वरमन्दिरे नरेन्द्रस्य आगमनम्<br>• शान्तिप्रदं दक्षिणेश्वरमन्दिरम्<br>• श्रीरामकृष्णस्य केशवचन्द्रसुरेन्द्रनाथाभ्यां सह आलोचनम्<br>• नरेन्द्रश्रीरामकृष्णसंवादः<br>• श्रीरामकृष्णस्य नरेन्द्रे विश्वासोद्गमः | 1 | | 16+4 |
| | | | 3. भगवद्दर्शनविषयिणी चर्चा<br>• श्रीरामकृष्णस्य समीपं नरेन्द्रस्य आगमनम्<br>• भगवद्दर्शने प्रश्नः उत्तरप्राप्तिश्च<br>• भगवत्याः माहात्म्ये श्रीरामकृष्णस्य दृढविश्वासः<br>• भवतारिणीनिकटं गन्तुं श्रीरामकृष्णस्य उपदेशः, नरेन्द्रस्य भवतारिणीनिकटे प्रार्थना | | | |
| | | | 4. स्वामिविवेकानन्दस्य अमेरिकां प्रति गमनोद्यमः<br>• स्वामिविवेकानन्दस्य विदेशगमने<br>• खेतडीमहाराजस्य साहाय्यम्<br>• नर्तक्याः गीतश्रवणेन नरेन्द्रस्य अविकारभावः<br>• स्वामिविवेकानन्दस्य विदेशगमने अन्येषां मनोव्यथा<br>• नरेन्द्रनाथस्य विवेकानन्द इति नामकरणम् | 1 | | 16+4 |
| | | | **उद्देश्यम् -:**<br>अर्वाचीननाटकपरम्परायाः,<br>भारतविवेकम् इति नाटकस्य, राष्ट्रस्य अभ्युदयाय स्वामिविवेकानन्दावदानस्य च अवबोधनम्।<br><br>**परिणाम-:**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1.स्वामिविवेकानन्दस्य भारदेशविषये विद्यमानां दृढतरप्रीतिं ज्ञास्यन्ति।<br>2. नरेन्द्रनाथस्य त्यागपूतजीवनं ज्ञास्यन्ति<br>3. स्वामिविवेकानन्दस्य भारतज्ञानपरम्परायाः प्रसारे समुद्यमं ज्ञास्यन्ति। | | | |
| | | | **पाठ्यग्रन्थः**<br>1.श्रीयतीन्द्रविमलचतुर्धुरीणविरचितं भारतविवेकम् (प्रथमदृश्यात् चतुर्थदृश्यपर्यन्तं१-३ क्रेडिट्, १० दृश्यं चतुर्थ क्रेडिट्)<br>**सहायकग्रन्थ -:** | 1 | | 16+4 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्य खण्ड), पद्मभूषण आचार्यश्रीबलदेवउपाध्याय,राधावल्लभ त्रिपाठी, उत्तरप्रदेश संस्कृतसंस्थान, लखनऊ, 1997<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>आन्तरिकमूल्याङ्कनम्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | 16+4 |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रिशोध प्रतिष्ठा चतुर्थवर्षम् | सप्तमम् | DSCC16 | रसप्रस्थानम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. रसशब्दस्य अर्थः व्यापकता च<br>• वैदिकवाङ्मये रसः (ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषत्सु)<br>• वाल्मीकिरामायणे रसः<br>• महाभारते रसः<br>• भागवते रसः | 1 | | 16+4 |
| | | | 2. काव्येषु रसः<br>• भासनाटकचक्रे रसः<br>• कालिदाससाहित्ये रसः<br>• बाणभट्टसाहित्ये रसः<br>• चम्पूरामायणे रसः | 1 | | 16+4 |
| | | | 3. अलङ्कारशास्त्रे रसविचारः<br>• भरतस्य रससूत्रं रससम्प्रदायस्य आचार्याश्च<br>• भट्टलोल्लट-श्रीशङ्कुकयोः मते रसविचारः<br>• भट्टनायकमते रसविचारः<br>• अभिनवगुप्तमते रसविचारः, पण्डितराजजगन्नाथमते रसविचारः | 1 | | 16+4 |
| | | | 4. आधुनिकसाहित्ये रसविचारः<br>• जगन्नाथपाठकस्य 'आर्यासहस्रारामे' रसः<br>• सत्यव्रतशास्त्रिणः श्रीरामकीर्तिमहाकाव्ये रसः<br>• रामावतारशर्मणः धीरनैषधरूपके रसः<br>• जग्गुवकुलभूषणस्य 'जयन्तिका' इति काव्ये रसश्च गीतिकाव्येषु रसश्च<br><br>उद्देश्यम् – रससिद्धान्तज्ञानम्<br><br>परिणामः- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्यनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. अलङ्कारशास्त्रे रसविचारान् ज्ञास्यन्ति।<br>2. विभिन्नानि रससूत्रव्याख्यानानि अवगमिष्यन्ति।<br><br>पाठ्यसहायकग्रन्थः - रससिद्धान्तः डा. नगेन्द्रः, अनुवादकः अमीरचन्द्रशास्त्री, श्रीलालबहादुरशास्त्री केन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली-1973 | 1 | | 16+4 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **सहायकग्रन्थः -**<br>1.रससिद्धान्तः डा. नगेन्द्रः, अनुवादकःअमीरचन्द्रशास्त्री, श्रीलालबहादुरशास्त्री केन्द्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली-1973<br>2.भारतीयवाङ्मयेषु रससिध्दान्तः, आद्याचरण झा, राष्ट्रिय-संस्कृतसंस्थानम्-1998<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः** .1-वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि .2 , एकेन वाक्येनउत्तरलेखनम् .3लघुत्तरीयप्रश्नाः .4 , दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्कार्यशालासु .1 - पाठ्यविषयाधारेण .3 ,प्रदत्तकार्यलेखनम् .2 ,भागग्रहणम् .5 ,लघुनाटकाभिनयः.4 ,विडियोनिर्माणम् शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्वाग्वर्धिनीसभायाम् .6 , अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-शोधप्रतिष्ठा चतुर्थवर्षम् | सप्तमम् | DSCC 17 | **वक्रोक्तिप्रस्थानम् औचित्यप्रस्थानं च** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. वक्रोक्तिप्रस्थानम्**<br>• कुन्तकस्य परिचयः, वक्रोक्तेः आद्यं चिन्तनम्<br>• वक्रोक्तिलक्षणम्<br>• वक्रोक्तिभेदाः (षट्)<br>• वक्रोक्तिदृष्ट्या रसस्य स्थानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. काव्येषु वक्रोक्तिपरिशीलनम्**<br>• रघुवंशे अभिज्ञानशाकुन्तले च वक्रोक्तिः प्रकरणवक्रता<br>• उत्तररामचरिते प्रकरणवक्रता<br>• उदात्तराघवे बालरामायणे च प्रबन्धवक्रता<br>• नागानन्दे प्रबन्धवक्रता | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. औचित्यप्रस्थानम्**<br>• क्षेमेन्द्रस्य परिचयः<br>• औचित्यस्य आद्यं चिन्तनम् (भरतमुनिः, भामहः, दण्डी, आनन्दवर्धनः)<br>• औचित्यस्वरूपम्<br>• औचित्यानुसारी छन्दःप्रयोगः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. औचित्यस्य महत्त्वं व्यापकता च**<br>• औचित्यसिद्धान्तः रसश्च<br>• औचित्यस्य पदादिस्थानानि<br>• क्षेमेन्द्रमते रसौचित्य-अनौचित्यालोचना<br>• रससाङ्कर्यौचित्य-अनौचित्यालोचना | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-:** वक्रोक्तिसिद्धान्तस्य औचित्यसिद्धान्तस्य च अवबोधनम्<br>**परिणाम-:**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. काव्यशास्त्रीयं वक्रोक्तिसिद्धान्तम् अवगमिष्यन्ति।<br>2. औचित्यसिद्धान्तं ज्ञास्यन्ति।<br>3. विविधकाव्येषु वक्रिक्तितत्त्वम् अन्वेष्टुं शक्ष्यन्ति<br>4. विविधकाव्येषु औचित्यतत्त्वं परिशीलयितुं प्रभविष्यन्ति।<br>पाठ्यग्रन्थ -: १. वक्रोक्तिजीविते प्रथमोन्मेषे १-२३कारिकाः | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | २. औचित्यविचारचर्चा आदितः रसौचित्यान्तं यावत्।<br><br>**सहायकग्रन्थः**:-1. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी-वी. ,काणे डा,ईश्वरचन्द्रशास्त्री. मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>2.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डासुशीलकुमार डे-, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>3.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डाराजवंश सहाय - हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**1-. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि ,2 . 3 एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम्. लघुत्तरीयप्रश्नाः ,4 . दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम् -1 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्. 2 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्.3पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माण.म् , 4 ,लघुनाटकाभिनयः.5 ,शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम् . 6।वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः. | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-शोधप्रतिष्ठा चतुर्थं वर्षम् | सप्तमम् | DSCC18 | रीतिप्रस्थानम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. काव्यालङ्कारपरम्परा<br>• काव्यालङ्कारपरिचयः<br>• रीतीनां परिचयः<br>• पदरचनावैशिष्ट्यम्<br>• रीतिः इति नाम<br>• रीतेः निर्वचनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. रीतिप्रकाराः<br>• वैदर्भी रीतिः<br>• वैदर्भ्याः समग्रगुणत्वम्<br>• गौडीया रीतिः<br>• गौडीयायाः ओजःकान्तिमत्त्वम्<br>• पाञ्चाली रीतिः<br>• पाञ्चाल्याः माधुर्यं सौकुमार्यता च | 1 | | 16+04 |
| | | | 3.रीतीनां गुणविशेषाः<br>• वैदर्भ्याः गुणसाकल्यम्<br>• गौडीयायाः स्तोकगुणत्वम्<br>• पाञ्चाल्याःस्तोकगुणत्वम्<br>• वैदर्भ्याः आरोहणत्वम्<br>• गौडीयायाः अभ्यासत्वम्<br>• पाञ्चाल्याः अभ्यासत्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | • वैदर्भ्याः वैचित्र्यम्<br>• समासाभावे शुद्धवैदर्भी<br>• अर्थगुणसम्पत्तिः<br>• अर्थगुणलेशा वैदर्भी<br>• व्यवहारेणोपदर्शनम् | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | • वैदर्भ्याः सहृदयहृदयरञ्जकत्वम्<br><br>**उद्देश्यम्-:** रीतिसिद्धान्तस्य अवबोधनम्<br><br>**परिणाम-:**<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. काव्यशास्त्रीयं रीतिसिद्धान्तम् अवगमिष्यन्ति।<br>2. काव्येषु रीतिव्यवहारं ज्ञास्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थ -:** वामनस्य काव्यालङ्कारसूत्राणि, प्रथमेऽधिकरणे द्वितीयोऽध्यायः सम्पूर्णः।<br><br>**सहायकग्रन्थः**-1. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी-वी. ,काणे डा,ईश्वरचन्द्रशास्त्री. मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>2.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डासुशीलकुमार - डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-शोधप्रतिष्ठा चतुर्थवर्षम् | सप्तमम् | DSCC19 | अलङ्कारप्रस्थानम् (अलङ्कारशास्त्रस्य प्राचीनस्रोतांसि) | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. अलङ्कारशब्दस्य व्युत्पत्तिः अर्थश्च**<br>• अलङ्कारस्य लक्षणानि<br>• वेदाङ्गम्<br>• पुराणम्<br>• इतिहासः | 1 | | 16+4 |
| | | | **2. अलङ्कारस्य काव्ये प्राधान्यम्**<br>• अलङ्कारप्रस्थानस्य प्रवर्तकः अनुयायिनश्च<br>• भामहः<br>• दण्डी<br>• उद्भटः<br>• रुद्रटः | 1 | | 16+4 |
| | | | **3. रीतिध्वनिवक्रोक्तिसिद्धान्तेषु अलङ्कारस्य स्थानम्**<br>• रीतिसिद्धान्ते स्थानम्<br>• ध्वनिसिद्धान्ते स्थानम्<br>• वक्रोक्तिसिद्धान्ते स्थानम् | 1 | | 16+4 |
| | | | **4. आधुनिककाव्यशास्त्रे अलङ्कारप्रस्थानस्य पुनःस्थापनम्**<br>• अलङ्कारस्य अभिनवा व्याख्या<br>• काव्यालङ्कारकारिकायां पुनःस्थापनम्<br>• अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रस्य अलङ्कारस्य पुनःस्थापनम् | 1 | | 16+4 |

**उद्देश्यम्** - अलङ्कारप्रस्थानस्य बोधनम्।

**परिणामा -:** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-
.1 अलङ्कारशास्त्रपरम्परायाः महाविषयत्वज्ञानम्, अलङ्काराणां काव्यात्मत्वज्ञानम्, .2अलङ्कारशास्त्रपरम्परायाः प्रकारतोदाहरणादिज्ञानम्, .3रसादीनां महत्त्वविज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।

**पाठ्यग्रन्थ -:** श्रीजयमन्तमिश्ररचिता काव्यात्ममीमांसा, काव्यालङ्कारकारिका, अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्राणि।

**सहायकग्रन्थाः-**

1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.
2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.
3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.
4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.

**परीक्षामल्याङ्कनपद्धतिः** .1-वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि एकेन वाक्येन .2 ,उत्तरलेखनम्

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्पाठ्यविषयाधारेण .3 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्.2 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्.1 - शास्त्रसंजीवनी .5 ,लघुनाटकाभिनयः.4 ,विडियोनिर्माणम्कार्यक्रमे भागग्रहणम् , वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः।.6 | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-शोधप्रतिष्ठा चतुर्थं वर्षम् | अष्टमम् | DSCC20 | **पाण्डुलिपिविज्ञानम्** | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. पाण्डुलिपिविज्ञानपरम्परा<br>➢ पाण्डुलिपिपरिचयः<br>➢ लिपीनाम् इतिहासः<br>➢ पाण्डुलिपीनां वैविध्यम्<br>➢ पाण्डुलिपिसंग्रहणम्<br>➢ पाण्डुलिपिसंरक्षणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. पाण्डुलिपिप्रकाराः<br>➢ ताडपत्राणि<br>➢ भूर्जपत्राणि<br>➢ ताम्रपत्राणि<br>➢ कर्गदपत्राणि<br>➢ पटलेखाः<br>➢ पाषाणलेखाः<br>➢ काष्ठफलकलेखाः<br>➢ मृत्तिकाफललेखाः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. भारतीयलिपिविज्ञानम्<br>➢ ब्राह्मीलिपिः<br>➢ शारदालिपिः<br>➢ ग्रन्थलिपिः<br>➢ खरोष्ठीलिपिः<br>➢ नन्दनागरीलिपिः<br>➢ तिरुताक्षरीलिपिः<br>➢ देवनागरीलिपिः<br>➢ तेलुगुलिपिः | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. पाण्डुलिपिसंरक्षणम्<br>➢ तैलात् परिरक्षणम्<br>➢ जलात् परिरक्षणम्<br>➢ मूर्खहस्तात् परिरक्षणम्<br>➢ पिपीलिकाभ्यः परिरक्षणम् | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | ➢ शिथिलबन्धनात् परिरक्षणम्<br>उद्देश्यम्-: पाण्डुलिपिसम्पादनकौशलस्य अभिव्यक्तिः।<br><br>परिणाम-:<br>अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1. पाण्डुलिपिविज्ञानपरम्पराम् अवगमिष्यन्ति।<br>2. पाण्डुलिपिप्रकारान् ज्ञास्यन्ति।<br>3. भारतीयलिपिविज्ञानं ज्ञास्यन्ति।<br>4. पाण्डुलिपिसम्रक्षणोपायान् ज्ञास्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थ -: शोधप्रविधिः पाण्डुलिपिविज्ञानं च-एन्. आर्. कण्णन्, अनुसन्धानस्य प्रविधि-प्रक्रिया- पी. एन्. शास्त्री, संस्कृतशोधप्रविधिः-सत्यनारायण आचार्यः।<br><br>सहायकग्रन्थः-<br>1. काणे. पी. वी. संस्कृतरचना<br>2. केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य शोधनीतिः www.sanskrit.nic.in Research Policy Document.<br>3. C. R. Kothari, Gaurav Garg. Research Methodolgy, (Methods & Techniques)<br>4. Manuscriptology: Shivaganesha Murthy R. S.; Sharada Publishing House, Delhi.<br>5. Katre, S. M. Introduction to Indian Textual Criticism.<br>6. Thakker, P.Jayant:Manuscriptology & Textual Criticism, Oriental Research Institute, Baroda, 2002<br>7. P. Chaddhah : Ethics in Comparative Research, 2018.<br>8. Kapoor, Kapil: Indian Knowledge Systems, Vol. 1&2, 2006.<br><br>परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः1-. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि ,2एकेन . वाक्येनउत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः ,4दीर्घोत्तरप्रश्नाः। .<br>आन्तरिकमूल्याङ्कनम्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम् -1 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्. 2 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्.3 ,पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्. 4 ,लघुनाटकाभिनयः.5शास्त्रसंजीवनी .कार्यक्रमे भागग्रहणम् , 6सभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः।वाग्वर्धिनी. | | | |

शास्त्री-शोधप्रतिष्ठापाठ्यक्रमः

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-शोधप्रतिष्ठा चतुर्थं वर्षम् | अष्टमम् | **DSCC21** | **शोधप्रविधिः** | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. अनुसन्धानपरम्परा<br>• शोधप्रविधिपरिचयः<br>• शोधस्यावश्यकता<br>• शोधप्रकृतिः<br>• शोधप्रकाराः<br>• गवेषणयोग्यता | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. शोधविषयचयनम्<br>• प्रास्ताविकं शोधकार्यम्<br>• शोधतत्त्वसङ्ग्रहः<br>• क्षेत्रकार्यसम्पादनम्<br>• शोधपत्रिकाव्यवहारः<br>• पादटीकासंख्यानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. मातृकाप्रस्तुतिः<br>• आवृत्तमुद्रणम्<br>• सूक्ष्मचित्रणम्<br>• मातृकाणां वैशिष्ट्यम्<br>• भाषान्तरीकरणम्<br>• भाषान्तरीकरणस्य प्रकाराः | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. अनुसन्धानस्य विविधाः पद्धतयः<br>• साहित्यिकपद्धतिः<br>• वैज्ञानिकी पद्धतिः<br>• विश्लेषणवर्गीकरणम्<br>• निष्कर्षः निर्णयश्च<br>• पाठचयनम्<br>• पाठसंशोधनम्<br>• अनुसन्धानस्य समस्याः<br>• शोधसम्भावनाः<br>• शोधफलम् | 1 | | 16+04 |

**उद्देश्यम्-:** संस्कृतसाहित्ये अनुसन्धानार्थम् अपेक्षितस्य शोधप्रविधेः अवबोधनम्

**परिणाम-:**

अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-

1. अनुसन्धानपरम्पराम् अवगमिष्यन्ति।
2. शोधविषयचयनप्रक्रियां ज्ञास्यन्ति।
3. मातृकाप्रस्तुतिविषयं ज्ञास्यन्ति।
4. अनुसन्धानपद्धतीः ज्ञास्यन्ति।

पाठ्यग्रन्थ -: अनुसन्धानस्य प्रविधि-प्रक्रिया- पी. एन्. शास्त्री, संस्कृतशोधप्रविधिः-सत्यनारायण आचार्यः।

**सहायकग्रन्थः-**

1. काणे. पी. वी. संस्कृतरचना
2. केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य शोधनीतिः www.sanskrit.nic.inResearch Policy Document.
3. C. R. Kothari, Gaurav Garg, Research Methodolgy, (Methods & Techniques)
4. Manuscriptology: Shivaganesha Murthy R. S.; Sharada Publishing House, Delhi.
5. Katre, S. M. Introduction to Indian Textual Criticism.
6. Thakker, P.Jayant:Manuscriptology& Textual Criticism, Oriental Research Institute, Baroda, 2002
7. P. Chaddhah : Ethics in Comparative Research, 2018.
8. Kapoor, Kapil: Indian Knowledge Systems, Vol. 1&2, 2006.

**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः** 1-. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि ,2एकेन . वाक्येनउत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः ,4दीर्घोत्तरप्रश्नाः। .

**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम् -1 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्. 2 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्.3 ,पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्. 4 ,लघुनाटकाभिनयः.5शास्त्रसंजीवनी .कार्यक्रमे भागग्रहणम् , 6सभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः।वाग्वर्धिनी.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शास्त्रि-प्रतिष्ठा चतुर्थ वर्षम् | अष्टमम् | DSCC22 | **राष्ट्रियशिक्षानीतिः तत्र संस्कृतं च**<br>1. 2020तः प्राक्तन्यां स्वातन्त्र्योत्तरायां राष्ट्रियशिक्षानीतौ संस्कृतम्<br>• संस्कृतशिक्षार्थं भारतीयैराङ्गलैश्च कृतः प्रयासः, संस्कृतशिक्षासम्बन्धि लार्डमेकाले-घोषणापत्रं च<br>• पारम्परिकसंस्कृतशिक्षा<br>• आधुनिकसंस्कृतशिक्षा<br>• महाविद्यालये संस्कृतशिक्षा<br>• विश्वविद्यालये संस्कृतशिक्षा<br>• संस्कृतपत्रिका<br>• लोके शिविरादिभिः संस्कृतप्रचारार्थं विहिताः प्रयासाः<br>• संस्कृताद् भारतस्यापेक्षा<br>• नवीना राष्ट्रियशिक्षनीतिः- 2020 (क)<br>2. उच्चतरा शिक्षा<br>• गुणवत्तापूर्णा विश्वविध्यालयाः (भारतीयोच्चतरशिक्षाव्यवस्थाहेतुका अभिनवा भाविनी दृष्टिः<br>• बहुविषया समग्रा शिक्षा<br>• शिक्षार्थमनुकूलं वातावरणं छात्रसहयोगश्च<br>• नवीना राष्ट्रियशिक्षनीतिः-2020 (ख)<br>3. उच्चतरशिक्षायां समतायाः समावेशः<br>• शिक्षकशिक्षा<br>• उच्चतरशिक्षापद्धतौ समग्रपरिवर्तनम्<br>• उच्चतरशिक्षासंस्थानेभ्याः प्रभावि शासनं नेतृत्वं च<br>4. नवीना राष्ट्रियशिक्षनीतिः-2020 (ग)<br>• भारतीय-भाषा.कला-संस्कृति-संवर्धनम्<br>• आनलाइन-डिजिटलशिक्षा<br>• नवीनशिक्षानीतौ संस्कृतम्<br>• केन्द्रीयसंस्कृतविद्यालयस्य शोधनीतिः<br><br>उद्देश्यम्:- राष्ट्रियशिक्षानीतौ संस्कृतस्य अवसरणाम् अवबोधनम्<br>परिणामः:- | 1<br><br>1<br><br>1<br><br>1 | 4 | 64+16<br>16+04<br><br>16+04<br><br>16+04<br><br>16+04 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1. स्वातन्त्र्योत्तरभारते राष्ट्रियशिक्षानीतौ संस्कृतस्य स्थितिः का आसीत् इति ज्ञास्यन्ति।<br>2. उच्चतरशिक्षायां संस्कृतस्य स्थानं किम् आसीत् इति ज्'जास्यन्ति।<br>3. नूतनराष्ट्रियशिक्षानीत्यनुगुणं साहित्यविधायाः अध्यनावसरान् ज्ञास्यन्ति।<br>सहायकग्रन्था:-<br>1.-संस्कृत आयोग का प्रतिवेदन (1956-1957) अनुवादक- श्रीअलखनिरंजन पाण्डेय, सम्पादक डा. पारसनाथद्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी-1979<br>2. राष्ट्रियशिक्षानीति-2020, मानवसंसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार<br>3. विश्वविद्यालयानुदानायोगस्य मार्गदर्शिका<br>4. केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य शोधनीति:<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | | |

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | प्रथमम् | DSCC-16 | काव्यस्वरूपं शब्दवृत्तयश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. मम्मटसम्मतं काव्यस्वरूपम्**<br>• मम्मटस्तस्य काव्यप्रकाराश्च<br>• मङ्गलपद्ये ध्वनितंकाव्यस्वरूपम्<br>• काव्यस्य प्रयोजनम्<br>• काव्यस्य कारणम्<br>• काव्यस्य स्वरूपम्<br>• काव्यस्य भेदाः | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. शब्दवृत्तयः**<br>• शब्दार्थभेदाः<br>• अर्थस्य व्यञ्जकत्वम्<br>• अभिधा<br>• संकेतग्रहः<br>• लक्षणा<br>• व्यञ्जना | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. व्यञ्जनाविषयकः पूर्वपक्षः**<br>• अभिधायां व्यञ्जनाया अन्तर्भावः<br>• लक्षणायां व्यञ्जनाया अन्तर्भावः<br>• अखण्डवाक्यार्थवादः<br>• अनुमाने व्यञ्जनाया अन्तर्भावः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4.. व्यञ्जनाविषयक उत्तरपक्षः**<br>• अभिधायागन्तर्भावस्य निराकरणम्<br>• वाच्य-व्यङ्ग्ययोर्भेदः<br>• निमित्तनैमित्तिकविवेकः<br>• मीमांसासूत्रविरोधः<br>• लक्षणायामन्तर्भावस्य निराकरणम्<br>• अखण्डवाक्यार्थवादमतालोचनम्<br>• अनुमाने व्यञ्जनाया अन्तर्भावस्य निराकरणम्<br>• व्यञ्जनाया अनिवार्यता<br>• व्यञ्जनाविषयक उत्तरपक्षः<br>• ध्वनिभेदो रसस्वरूपं च<br>1. ध्वनिभेदः<br>2. रसस्वरूपम्<br>3. रससूत्रस्य व्याख्यानम्<br>**उद्देश्यम्:-** काव्यस्वरूपस्य शब्दशक्तीनां च परिज्ञापनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं | 1 | | 16+04 |

छात्राः-
1. काव्यस्वरूपपरिज्ञानम् 2. काव्यस्य प्रयोजनज्ञानम् 3. काव्यभेदज्ञानम् 4. काव्ये वृत्तिज्ञानम् 5. व्यञ्जनाज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।

**पाठ्यग्रन्थः**:- 1.काव्यप्रकाशः, मम्मटः, भट्टवामनाचार्यः, (झलकीकरः), परिमल- पब्लिकेशनम्, दिल्ली, 2008

**सहायकग्रन्थः-** 1.काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005

2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007

3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988

4.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.

**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।

**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्र-कूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | प्रथमम् | DSCC-17 | **ध्वनिसिद्धान्तः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. ध्वनिप्रस्थानपरम्परा**<br>• ध्वन्यालोकस्य परिचयः<br>• ध्वन्यालोकस्य वैशिष्ट्यम्<br>• आनन्दवर्धनस्य शास्त्रवैदग्ध्यम्<br>• ध्वनेः काव्यात्मत्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. ध्वनिस्थापनम्-**<br>• ध्वनेः अभाववादः<br>• भाक्तवादः अनिर्वचनीयवादः च<br>• प्रतिभाविशेषः वस्तुतत्त्वम्<br>• लक्षणामूलध्वनिः अभिधामूलध्वनिः च | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **ध्वनिप्रकाराः-**<br>• अविवक्षितवाच्यध्वनिः<br>• विवक्षितान्यपरवाच्यध्वनिः<br>• अर्थान्तरसङ्क्रमितवाच्यध्वनिः<br>• अत्यन्ततिरस्कृतवाच्यध्वनिः<br>• ध्वनिप्रकाराणाम् उदाहरणानि | 1. | | 16+04 |
| | | | **4. रसप्रधानाः**<br>• रसप्रधाने काव्ये अलङ्कारस्य सन्निवेशप्रकारः<br>• शब्दशक्तिमूलध्वनिः<br>• अर्थशक्तिमूलध्वनिः<br>• अभिधामूलध्वनिः<br>• गुणीभूतव्यङ्ग्यत्वं<br>• ध्वनिप्रकाराणाम् उदाहरणानि<br>**उद्देश्यम्-** ध्वनिविरोधिमतस्यं ध्वनिसिद्धान्तस्य च बोधनम्।<br>**परिणामाः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.ध्वनेः महाविषयत्वज्ञानम्,<br>2. ध्वनेः काव्यात्मत्वज्ञानम्,<br>3. ध्वनेः प्रकारतोदाहरणादिज्ञानम्,<br>4. रसादीनां महत्त्वविज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** आनन्दवर्धनस्य ध्वन्यालोकः. 1, 2 उद्योतौ।<br>**सहायकग्रन्थाः-**<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967. | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः। **आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-प्रथमवर्षम् | प्रथमम् | DSCC 18 | पण्डितराजदिशा काव्यस्य लक्षणम्, भेदाः, कारणं, रसस्वरूपं च | | 4 | 64+16 |
| | | | **१. काव्यलक्षणम्**<br>• पण्डितराजजगन्नाथस्य परिचयः<br>• साहित्यशास्त्रे रसगङ्गाधरस्य स्थानम्<br>• मङ्गलाचरणम्<br>• काव्यलक्षणविचारः | 1 | | 16+04 |
| | | | २. काव्यकारणम्<br>• ममटोक्तकाव्यलक्षणखण्डनम्<br>• विश्वनाथोक्तकाव्यलक्षणखण्डनम्<br>• प्रतिभा<br>• व्युत्पत्त्यभ्यासौ | 1 | | 16+04 |
| | | | ३. काव्यभेदाः<br>• उत्तमोत्तमकाव्यम्<br>• उत्तमकाव्यम्<br>• मध्यमकाव्यम्<br>• अधमकाव्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | ४. रसस्वरूपम्<br>• जगन्नाथमतेन रससूत्रव्याख्या<br>• अभिनवगुप्तसम्मतस्य रसस्वरूपस्य जगन्नाथदृष्ट्या व्याख्यानम्<br>• भट्टनायकसम्मतस्य रसस्वरूपस्य जगन्नाथदृष्ट्या व्याख्यानम्<br>• नव्यमतं अन्येषां मतानुसारं रसव्याख्यानं च | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-** जगन्नाथसम्मतानां काव्यलक्षणभेदानां रसरूपविषयाणाम् एकादशमतानां च बोधनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.जगनाथोक्तकाव्यलक्षणकारणपरिज्ञानम्<br>2.परकीयादिसम्मतस्य रसस्वरूपस्य परिज्ञानम्<br>3.रससूत्रव्याख्याने अभिनवगुप्तीयस्य व्याख्यानस्य परिज्ञानम्<br>4.भट्टनायकमते रसस्वरूपस्य परिज्ञानम्<br>5.नव्यमतद्वयस्य परिचयावाप्तिः च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** रसगंगाधरः, पं.जगन्नाथः, बदरीनाथझा-, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016<br>**सहायकग्रन्थाः -**<br>1.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डासुशीलकुमार डे-, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डाराजवंश सहाय - हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>3.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ। <br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः। <br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | प्रथमम् | DSCC-19 | **वक्रोक्तिसिद्धान्तः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. कुन्तकसम्मतं काव्यस्य प्रयोजनं लक्षणं च**<br>• कुन्तकस्य परिचयः<br>• वक्रोक्तिजीवितस्य सामान्यपरिचयः<br>• काव्यप्रयोजनम्<br>• काव्यलक्षणम्<br>• शब्दार्थस्वरूपम्<br>• वक्रोक्तिस्वभावोक्तिसमीक्षणम्<br>• साहित्यस्वरूपम् | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **2. वर्णविन्यासाद्याः चत्वारो वक्रोक्तिप्रकाराः**<br>• वर्णविन्यासवक्रता<br>• पदपूर्वार्द्धवक्रता<br>• प्रत्ययाश्रयवक्रता<br>• वाक्यवक्रता | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **3. प्रकरण-प्रबन्धवक्रता, बन्धः, सुकुमारमार्गश्च**<br>• प्रकरणवक्रता<br>• प्रबन्धवक्रता<br>• बन्धस्वरूपम्<br>• बन्धस्याह्लादकारित्वम्<br>• सुकुमारमार्गस्वरूपम्<br>• सुकुमारमार्गस्य गुणाः | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **4. विचित्रमाध्यममार्गः, मार्गसामान्यगुणश्च**<br>• विचित्रमार्गस्वरूपम्<br>• विचित्रमार्गस्य गुणाः<br>• मध्यममार्गस्वरूपम्<br>• मार्गसामान्यगुणौ<br>• औचित्यगुणः<br>• सौभाग्यगुणः | 1 | | 16 + 4 |
| | | | **उद्देश्यम्-** वक्रोक्तिसिद्धान्तस्य ज्ञापनम्।<br>**परिणामाः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. वक्रोक्तिप्रकारान् ज्ञास्यन्ति। 2. वक्रोक्तेः प्रयोगान् स्वयं कर्तुं प्रभविष्यन्ति। 3. वक्रोक्तिविवेचनं ज्ञात्वा लक्ष्यग्रन्थान् च विवेचयिष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** वक्रोक्तिजीवितम्(1उन्मेषः)<br>**सहायकग्रन्थाः-**1.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा- सुशीलकुमार डे. श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>2. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>3.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ।<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | द्वितीयम् | DSCC-20 | ध्वनिः गुणी[illegible]व्यङ्ग्यभेदाश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. ध्वनेरष्टा[illegible] भेदाः**<br>• [illegible]विवक्षितवाच्यः असंलक्ष्यक्रमध्वनिश्च<br>• अविवक्षितवाच्यध्वनिः<br>• [illegible]न्यपरवाच्यध्वनिः [illegible]क्रमध्वनेरष्टौ भेदाःच<br>• [illegible]क्तं रसस्वरूपं रससूत्रस्य [illegible]नानि च | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. रसादिध्व[illegible]दाः उदाहरणानि च**<br>• [illegible]र्देद उदाहरणं च<br>• [illegible]र्लक्षणमुदाहरणं च<br>• [illegible]भावाभासयोर्लक्षणम् उदाहरणं च<br>• [illegible]रुदाहरणम्<br>• [illegible]स्योदाहरणम्<br>• [illegible]रुदाहरणम्<br>• [illegible]ताया उदाहरणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. संलक्ष्य[illegible]दाः**<br>• [illegible]नुद्भवः<br>• [illegible]त्थुद्भवः<br>• [illegible]त्थुद्भवाः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. गुणीभूत[illegible]**<br>• [illegible]यङ्ग्यस्य भेदाः<br>• [illegible]यङ्ग्यस्योदाहरणानि<br>• [illegible]भूतव्यङ्ग्यसङ्करः | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्-** [illegible]भूतव्यङ्ग्यस्य च सभेदोदाहरणं बोधनम्।<br>**परिणामाः-** [illegible]क्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. ध्वनेः गु[illegible]ङ्ग्यस्य च ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br>2. रसादि[illegible]तम् अवगमनं प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्र[illegible]** काव्यप्रकाशः, मम्मटः, भट्टवामना[illegible] (झलकीकरः), परिमल-पब्लिकेशन[illegible], 2008<br>**सहायकग्र[illegible]** [illegible]संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, [illegible]कुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, [illegible]न्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2. भा[illegible] काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, [illegible] सहाय हीरा, चौखम्बा [illegible], वाराणसी 1967<br>3.संस्कृत[illegible] बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बल[illegible]ध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लख[illegible]<br><br>परीक्षामूल[illegible]द्धतिः-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन [illegible]लेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तर[illegible]<br>आन्तरिक[illegible]नम्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि [illegible]मूल्याङ्कनं विधेयम्-<br>1.कार्यशा[illegible]णम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्,<br>3.पाठ्य[illegible]डियोनिर्माणम्,<br>4.लघुना[illegible] 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहण[illegible]र्द्धिनीसभायाम्<br>अधीति[illegible]: | 1 | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार [illegible]कल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय [illegible]) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-1 | द्वितीयम् | DSCC-21 | व्यञ्जकमु[illegible] ध्वनेः भेदः रसादीनां प्राधान्यं काव्यसंवादश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | **1.** [illegible]कत्वादिमुखेन ध्व[illegible]निरूपणम्-<br>• वर्णपदवाक्यादीनां व्यञ्जकत्वम्<br>• वर्णपदवाक्यादिव्यञ्जकत्वस्योदाहरणानि<br>• गुणानाश्रित्य संघटनायाः रसव्यञ्जक्तम्<br>• रसव्यञ्जकत्वस्योदाहरणानि | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. रसविरो**[illegible]-<br>• रसविरोधः<br>• रसविरोधपरिहारः<br>• पदप्रकाशता<br>• वाक्यप्रकाशता<br>• स्वतःसम्भवी<br>• गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य ध्वनेः च संसृष्टिः | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. ध्वनिका**[illegible]त्वम्-<br>• [illegible]सङ्क्रमिताश्रयेण नवत्वम्<br>• [illegible]स्कृताश्रयेण नवत्वम्<br>• [illegible]न्यपरत्वाश्रयेण नवत्वम्<br>• [illegible] मुख्यरसः<br>• [illegible] मुख्यरसः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. संवादः**-<br>• [illegible]न्यसदृशता<br>• [illegible] प्रकाराः<br>• [illegible]बिम्बवत् सादृश्यम्<br>• [illegible]वत् सादृश्यम्<br>• [illegible]त् सादृश्यम्<br>• [illegible]यवर्त्म<br>**उद्देश्यम्:-** [illegible]ध्वनिभेदादीनां बोधनम्।<br>**परिणामः-** [illegible]क्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.रसादीनां [illegible], 2.रसविरोधपरिहारज्ञानम्, 3.ध्वनिका[illegible]ज्ञानम्, 4.संवादस्यान्यसादृश्यविवेकज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**- [illegible]प्रकाशः, मम्मटः, भट्टवामनाचार्यः, (झलकीकरः) [illegible]- पब्लिकेशनम्, दिल्ली, 2008<br>**सहायकग्रन्थ**[illegible]मीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा [illegible] वाराणसी, 2005<br>2. संस्कृतका[illegible] इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालब[illegible], दिल्ली, 2007 | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 3. संस्कृ [illegible] का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीम [illegible] र्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 19[illegible]<br>4.भारतीय [illegible] के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीर [illegible] विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br><br>**परीक्षामूल्य** [illegible] :-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्त [illegible] घुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमू** [illegible] म्- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मू [illegible] यम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्य [illegible] यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटक [illegible] 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धि [illegible] तिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार ... आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय ... क्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य ... | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-1 | द्वितीयम् | DSCC -22 | **भावध्वनिः** | | 4 | 64+16 |
| | | | १. भा ... णम् | 1 | | 16+04 |
| | | | • ...वध्वनिलक्षणपरिष्कारः<br>• ...ः, स्मृतिः, व्रीडा, मोहः,धृतिः इति ...भावानां विचारः।<br>• ...ङ्का, ग्लानिः, दैन्यम्, चिन्ता, मदः ... भावानां विचारः।<br>...ः, गर्वः, निद्रा, मतिः,व्याधिः इति ...भावानां विचारः। | | | |
| | | | २. त्रा ... वाः | 1 | | 16+04 |
| | | | • ...ासः, सुप्तम्, विबोधः, अमर्षः, ...हित्थम् इति भावानां विचारः।<br>...ता, उन्मादः, मरणम्, वितर्कः, ...ादः इति भावानां विचारः।<br>...सुक्यम्, आवेगः, जडता, ...लस्यम्, असूया इति भावानां ...ारः।<br>...स्मारः, चपलता, निर्वेदः, ...दिविषया रतिः इति भावानां ...ारः, भावानां संख्यानियमः। | | | |
| | | | ३. रस ... ासादिविचारः | 1 | | 16+04 |
| | | | ...भासविचारः<br>...ानग्राश्लिताश्चैव' इत्यादिपद्ये ...साभासयोः विचारः।<br>...ाभासविचारः<br>...शान्तिः भावोदयश्च। | | | |
| | | | ४. भा ... चारः | 1 | | 16+04 |
| | | | ...सन्धिः, भावशबलता<br>...शान्त्यादौ भावस्य प्राधान्यविचारः<br>...ध्वनीनां चमत्कारवैलक्षण्यम्<br>...दीनां संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यत्वविचारः | | | |
| | | | **उद्देश्यम्:-** भा... ...ाहरणं ज्ञापनम्।<br>**परिणामः:-** अ... ...य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. भावादीनां प्र... ...। 2. रसाभासादीनं परिज्ञानं प्राप्स्यन्ति। 3. र... ...ान् च ज्ञास्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः:-** ... ...थमाननम् ('अथ किं भावत्वम्' इत्यतः आरभ्य ... यावत्)<br>**सहायकग्रन्था...**<br>1.काव्यात्ममी... ...यमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 200... | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | संस्कृतकाव्यशा ... इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशा ... लबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>2.संस्कृतकाव्यशा ... इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराग ... ार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>3.भारतीय काव्य ... ानिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चे ... भवन, वाराणसी 1967<br>4.संस्कृतवाङ्मय ... इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउप ... देशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ।<br><br>**परीक्षामूल्याङ्** ... :-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्ये ... नम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>आन्तरिकमूल ... धोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्य ... - 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेर ... विषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाि ... शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीस ... विषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-1 | द्वितीयम् | DSCC-23 | औचित्यसिद्धान्तः काव्यशास्त्रसङ्ग्रहश्च | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **औचित्यसिद्धान्तपरम्परा**<br>• औचित्यस्य महत्त्वम्<br>• औचित्यस्य लक्षणम्<br>• क्षेमेन्द्रस्य कवित्वं प्रागल्भ्यं च<br>• औचित्यविचारचर्चायाः साङ्गत्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **औचित्यस्य प्रकाराः**<br>• कालौचित्यम्<br>• देशौचित्यम्<br>• प्रतिभौचित्यम्<br>• स्वभावौचित्यम्<br>• औचित्यस्योदाहरणानि | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **शास्त्रसङ्ग्रहः शास्त्रनिर्देशश्च**<br>• शास्त्रसङ्ग्रहः<br>• शास्त्रनिर्देशः<br>• काव्यविद्या<br>• कविरहस्यम्<br>• शास्त्रं काव्यं च<br>• इतिहासगतिः<br>• उपविद्याः कलाः | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. **काव्यपुरुषोत्पत्तिः शिष्यप्रतिभा च**<br>• काव्यपुरुषः<br>• छन्दोमुद्रा देवी<br>• औड्रमागधी प्रवृत्तिः<br>• बुद्धिमतः प्रतिपत्तिः<br>• कथापुरुषव्यवहारः<br>• कारयित्री प्रतिभा<br>• भावयित्री प्रतिभा<br>उद्देश्यम्:- काव्ये औचित्यसिद्धान्तस्य प्रत्यभिज्ञापनम्।<br>परिणाम:- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1,औचित्यस्य महत्वज्ञानम्,<br>2.औचित्यविचारचर्चायाः साङ्गत्यपरिज्ञानम्,<br>3.औचित्यस्य प्रकारपरिज्ञानम्,<br>4.काव्यशास्त्रप्रकारपरिज्ञानम्,<br>5.काव्यपुरुषोत्पत्तिशिष्यप्रतिभपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>पाठ्यग्रन्थः:--क्षेमेन्द्रस्य औचित्यविचारचर्चा, | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | राजशेखरस्य काव्यमीमांसा-१,२,३,४।<br><br>**सहायकग्रन्थाः-** 1.काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005<br>संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007<br>2.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>3.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>4.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ।<br><br>परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्-<br>1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत**
**शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा**

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2 (अलंकारवर्गः) | तृतीयम् | DSCC 24 | काव्यदोषाः |  | 4 | 64+16 |
|  |  |  | १. **दोषसामान्यलक्षणम् पदगतदोषाश्च**<br>• दोषसामन्यलक्षणम्, दोषाणां वर्गीकरणम्, पददोषाः<br>• श्रुतिकटुत्वम्, च्युतसंस्कृतित्वम्, अप्रयुक्तत्वम्, असमर्थत्वम्<br>• निहतार्थत्वम्, निरर्थकत्वम्, अश्लीलत्वम्, अप्रतीतत्वम्<br>• ग्राम्यत्वम्, नेयार्थत्वम्, अविमृष्टविधेयांशत्वम् | 1 |  | 16+4 |
|  |  |  | २. **वाक्यदोषनिरूपणम्**<br>• प्रतिकूलवर्णत्वम्, विसन्धित्वम्, हतवृत्तत्वम्<br>• न्यूनपदत्वम्, अधिकपदत्वम्, कथितपदत्वम्<br>• पतत्प्रकर्षत्वम्, समाप्तपुनरात्तत्वम्<br>• प्रसिद्धिहतत्वम्, भग्नप्रक्रमत्वम्, अक्रमत्वम् | 1 |  | 16+4 |
|  |  |  | ३. **अर्थदोषनिरूपणम्**<br>• अपुष्टत्वम्, कष्टत्वम्, व्याहतत्वम्<br>• पुनरुक्तत्वम्, दुष्क्रमत्वम्, सन्दिग्धत्वम्<br>• निर्हेतुत्वम्, अनवीकृतत्वम्, साकाङ्क्षत्वम्<br>• विध्ययुक्तत्वम्, अनुवादायुक्तत्वम् | 1 |  | 16+4 |
|  |  |  | ४. **रसदोषनिरूपणम्**<br>• रसस्थायिसञ्चारिणां स्वशब्दवाच्यत्वम्, अनुभावविभावयोः कष्टकल्पनया व्यक्तिः<br>• प्रतिकूलविभावादि-परिग्रहः, पुनःपुनः दीप्तिः<br>अकाण्डे प्रथनम्<br>अकाण्डे छेदः<br>• अङ्गस्य अतिविस्तृतिः, अङ्गिनः अननुसन्धानम्, प्रकृतिविपर्ययः, अनङ्गस्याभिधानम्<br>• दोषपरिहारोपायाः<br>उद्देश्यम्- काव्यगतानां दोषाणां प्रत्यभिज्ञापनम्।<br>परिणामः- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.दोषज्ञानेन निर्दुष्टसाहित्यनिर्माणे निपुणाताम् | 1 |  | 16+4 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **पाठ्यग्रन्थः** – आचार्यमम्मटकृतः काव्यप्रकाशः - सप्तमोल्लासः<br>**सहायकग्रन्थः**:-<br>1.आचार्यविश्वनाथकृतः साहित्यदर्पणः,<br>2.आचार्यवामनझलकीकरकृतबालबोधिनीटीकासहितः काव्यप्रकाशः।<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**:-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2 (अलंकारवर्गः ) | तृतीयम् | DSCC 25 | **संलक्ष्यमक्रमध्वनिः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **१. दशभेदः संलक्ष्यक्रमध्वनिः**<br>• एवं साकल्येन दशभेदोऽयम्।<br>• बालार्कशब्दस्थले अर्थबोधः<br>• नानार्थस्य शब्दस्य अप्राकरणिके अर्थे व्यञ्जना इति प्राचां सिद्धान्तखण्डनम्<br>• जगन्नाथमते नानार्थस्थले अर्थप्रतीतिः | 1 | | 16+4 |
| | | | **२. व्यञ्जनायाः स्थलम्**<br>• योगरूढिस्थले व्यञ्जना<br>• संयोगः, विप्रयोगः, साहचर्यम्, विरोधिता च<br>• अर्थः, प्रकरणम्, लिङ्गम्, अन्यशब्दस्य सन्निधिः<br>• सामर्थ्यम्, औचिती, देशः, कालः, व्यक्तिः, स्वरादिः | 1 | | 16+4 |
| | | | **३. शब्दशक्तिमूलः अलङ्कारध्वनिः वस्तुध्वनिश्च**<br>• अलङ्कारध्वनिः<br>• 'श्लेष-उपमाध्वन्योः भेदः<br>• विरोधाभासध्वनिः, व्यतिरेकध्वनिश्च<br>• शब्दशक्तिमूलवस्तुध्वनिः | 1 | | 16+4 |
| | | | **४. अर्थशक्तिमूलध्वनिः**<br>• अर्थशक्तिमूल-स्वतःसम्भविध्वनिभेदाः<br>• अर्थशक्तिमूल-कविप्रौढोक्तिसिद्धध्वनिभेदाः<br>• उभयशक्तिमूलः ध्वनिः<br>• उभयशक्तिमूलध्वनेः शब्दशक्तिमूलकत्वविचारः | 1 | | 16+4 |
| | | | **उद्देश्यम्-** पण्डितराजदिशा संलक्ष्यक्रमव्यङ्ग्यध्वनेः सभेदोहरणज्ञापनम्।<br>**परिणाम-:** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.ध्वनिभेदानां विषये ज्ञानं प्राप्स्यन्ति। ध्वनिप्रकारान् च ज्ञास्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**:- रसगङ्गाधरः (द्वितीयाननस्य आरम्भतः 'अभिधामूलध्वनिनिरूपणान्तं यावत्) पं.जगन्नाथः, पबदरीनाथझा-, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2016.<br><br>**सहायकग्रन्थः-**<br>.1काव्यात्ममीमांसा, डा. जयमन्तमिश्रः, चौ.वि-भ- वाराणसी, 2005<br>.2संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ।<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-<br>2(अलंकारवर्गः) | तृतीयम् | DSCC-26 | अनुमाने ध्वनेरन्तर्भावः | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. ध्वनिखण्डनपरम्परा<br>• व्यक्तिविवेकस्य परिचयः<br>• व्यक्तिविवेकस्य वैशिष्ट्यम्<br>• महिमभट्टस्यशास्त्रवैदग्ध्यम्<br>• काव्यानुमानसिद्धान्तः | 1 | | 16+4 |
| | | | 2. ध्वनिलक्षणखण्डनम्<br>• शब्दखण्डनम्<br>• क्रिया प्रवृत्तिनिमित्तम्<br>• क्त्वाप्रत्ययस्य पौर्वकाल्यम्<br>• अर्थनिरूपणम्<br>• साध्यसाधनभावः | 1 | | 16+4 |
| | | | 3. अर्थस्य द्वैविध्यम्<br>• वाच्यः अनुमेयश्च<br>• अनुमितानुमेयार्थविषयः<br>• रसस्य काव्यार्थत्वम्<br>• स्थायिविभावादयः<br>• भ्रान्तिरपि सम्बन्धतः प्रमा | 1 | | 16+4 |
| | | | 4. काव्यानुमितिः<br>• सतः त्रिधा अभिव्यक्तिः<br>• असतः एका अभिव्यक्तिः<br>• वाच्यार्थादन्तरिता प्रतीतिः<br>• ध्वनिलक्षणे दश दोषाः<br>• काव्यानुमितिलक्षणम् | 1 | | 16+4 |
| | | | **उद्देश्यम्-** महिमभट्टसम्मतकाव्यानुमितिसिद्धान्तस्य परिज्ञापनम्।<br>**परिणामः-**<br>1.ध्वनिखण्डनसाहित्यपरिज्ञानम्,<br>2. काव्यानुमानसिद्धान्तपरिज्ञानम्,<br>3.साध्यसाधनभावपरिज्ञानम्,<br>4 भ्रान्तिरपि सम्बन्धतः प्रमेति परिज्ञानम्,<br>5. काव्यानुमितिलक्षणपरिज्ञानम्।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः-** महिमभट्टस्य व्यक्तिविवेकः-प्रथमः विमर्शः- (आदितः काव्यानुमितिपर्यन्तम्)।<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967. | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ<br>3.साहित्यशास्त्र कोश, डा.राजवंश सहाय हीरा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना 1988.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्क: | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रम: | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2 (अलंकारवर्ग:) | तृतीयम् | DSCC 27 | **काव्यशब्दस्वरूपम् ( दण्डिभामहदृशा)**<br>**१. काव्यशरीरम्**<br>• ग्रन्थकर्तुः परिचयः मङ्गलाचरणञ्च<br>• काव्यशरीरम्<br>• महाकाव्यलक्षणम्<br>• कथाख्यायिकयोः एकजातित्वम्<br>**२. वाङ्मयं गुणाश्च**<br>• चतुर्विधं वाङ्मयम्<br>• वैदर्भमार्गस्य गुणाः-१ (श्लेषः, प्रसादः, समता, माधुर्यम्, सुकुमारता)<br>• वैदर्भमार्गस्य गुणाः-२ (अर्थव्यक्तिः, उदारता, ओजः, कान्तिः, समाधिः)<br>• काव्यसम्पदः कारणम्, काव्याभ्यासस्य माहात्म्यम्<br>**३. शब्दविषयक-मतानि**<br>• साहित्यनिर्माणे व्याकरणशास्त्रस्य भूमिका<br>• शब्दविषये नैयायिकमतं तत्खण्डनञ्च<br>• अप्रयुक्तशब्दानां प्रयोगनिषेधः<br>• वार्त्तिक-भाष्यानुसारि शब्दप्रयोगौचित्यम्<br>**४. शब्दप्रयोगविधिः**<br>• सूत्रानुसारं शब्दप्रयोगः<br>• समासे प्रयोगविधिः<br>• प्रत्ययान्तशब्दानां प्रयोगविधिः<br>• णिजन्तप्रयोगविधिः<br>• इमनिच्प्रत्यय-ईयसुन् प्रत्यययोः प्रयोगचारुता<br>**उद्देश्यम्-** काव्यशब्दस्वरूपस्य दण्डिभामहदृशा परिज्ञापनम्।<br>**परिणाम-: -** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. शब्दमूलकम् साहिये सौन्दर्याधानम्,<br>२. विविधभाषासाहित्यनिर्माणार्थं निर्देशस्य सङ्केतप्राप्तिः,<br>2. साहित्ये शब्दप्रयोगविधेः ज्ञानं च प्राप्स्यति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-**<br>१. दण्डिकृतः काव्यादर्शः-प्रथमपरिच्छेदः सम्पूर्णः (१,२ क्रेडिट्)<br>२. भामहकृतः काव्यालङ्कारः- षष्ठः परिच्छेदः सम्पूर्णः (३,४ क्रेडिट्)<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.काव्यात्ममीमांसा, डा,श्रीजयमन्तमिश्र. चौखम्बा विद्याभवन ,वाराणसी, 2005<br>2.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी,काणे-वी. डा .ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा,सुशीलकुमार डे- श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा,राजवंश सहाय हीरा- चौखम्बा | <br>1<br><br><br><br><br>1<br><br><br><br>1<br><br><br><br><br><br>1 | 4 | 64+16<br>16+04<br><br><br><br><br>16+04<br><br><br><br>16+04<br><br><br><br><br><br>16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः। **आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2(अलंकारवर्गः) | चतुर्थम् | DSCC-28 | **भोजसम्मता बाह्यालङ्काराः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. शब्दालङ्कारनिर्णयः**<br>• सरस्वतीकण्ठाभरणस्य परिचयः<br>• सरस्वतीकण्ठाभरणस्य<br>• वैशिष्ट्यम्<br>• भोजदेवस्यशास्त्रवैदग्ध्यम्<br>• शब्दालङ्कारसिद्धान्तः | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. सामान्यलक्षणम्**<br>• शब्दालङ्कारप्रकाराः<br>• बाह्यालङ्काराः<br>• आभ्यन्तरालङ्काराः<br>• जातिलक्षणम्<br>• देशौचितीलक्षणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. वृत्तरीतिवृत्तिछायामुद्रादिः**<br>• वृत्तप्रकाराः<br>• रीतिप्रकाराः<br>• वृत्तयस्तासां प्रकाराः<br>• छायाप्रकाराः<br>• मुद्राप्रकाराः<br>• उक्तिप्रकाराः<br>• युक्तिप्रकाराः<br>• भणितिप्रकाराः<br>• गुम्फनप्रकाराः<br>• शय्याप्रकाराः | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. यमकादिपरिचयः**<br>• यमकलक्षणम्<br>• श्लेषलक्षणम्<br>• अनुप्रासलक्षणम्<br>• वृत्तेर्द्वादशभेदाः<br>• चित्रस्य षोढात्वम्<br>• गूढलक्षणभेदाः<br>• प्रश्नोत्तरलक्षणम्<br>• काव्यादिव्युत्पत्तिकारणम्<br>• श्रव्यकाव्यलक्षणम्<br>• दृश्यकाव्यलक्षणम्<br>• चित्राभिनयवल्लक्षणम् | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **उद्देश्यम्-** भोजदृशा काव्यस्य शब्दगतानां बाह्यालङ्काराणां परिज्ञापनम्।<br>**परिणाम:-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.शब्दालङ्कारसाहित्यपरिज्ञानम्,<br>2.शब्दालङ्कारसिद्धान्तपरिज्ञानम्,<br>3.यमकादिपरिचयपरिज्ञानम्,<br>4.काव्यादिव्युत्पत्तिकारणपरिज्ञानम्,<br>5.चित्राभिनयवल्लक्षणपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थ:-** भोजदेवस्य सरस्वतीकण्ठाभरणम् शब्दालङ्कारनिर्णयो नाम द्वितीयः परिच्छेदः।<br>**सहायकग्रन्थ:-**<br>1.भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>2. संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), बलदेव उपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ<br>3. भारतीय साहित्यशास्त्र कोश, डा.राजवंश सहाय हीरा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना 1988.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2(अलंकार वर्गः) | चतुर्थम् | DSCC-29 | **काव्यालंकारकारिकायां पाश्चात्यकाव्यशास्त्रे च प्रतिपादिताः सिद्धान्ताः** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. आधुनिकभारतीयकाव्यशास्त्रपरम्परा रेवाप्रसादद्विवेदी च**<br>• आधुनिकभारतीयकाव्यशास्त्रपरम्परा<br>• रेवाप्रसादद्विवेदिनः परिचयः<br>• रेवाप्रसादद्विवेदिसम्मतं काव्यम्<br>• काव्यस्य स्वरूपम्<br>• काव्यस्य कारणम्<br>• काव्यस्य प्रयोजनम्<br>• साहित्यपदार्थः<br>• षट् प्रस्थानानि<br>• काव्यस्यात्मालंकारः<br>• अलंकारस्यावाच्यता<br>• रूपकादिभेदेन काव्यभेदः<br>• वस्तुमात्रस्य द्वैविध्यम्-बाह्यं ज्ञानरूपं च<br>• लिपि-भाषाभेदेन काव्याभेदः<br>• काव्यस्य संगीताद् भेदः<br>• काव्यस्य कविरसाभ्यां भेदः | 1 | | 16+4 |
| | | | **2. शब्दार्थसम्बन्धाः**<br>• शब्दस्वरूपम्<br>• अन्विताभिधानवादः<br>• अभिहितान्वयवादः<br>• अखण्डवाक्यार्थवादः<br>• तत्समुच्चयवादः<br>• स्फोटे शब्दत्वस्याभावः<br>• परा-पश्यन्त्यादयो भेदाः<br>• शब्देभिधादिशक्तीनामभावः<br>• भाषास्वस्वरूपम्<br>• काव्यकृष्णस्य मूर्तिर्भाषा<br>• अर्थस्य स्वरूपम्<br>• शब्दार्थयोर्ज्ञानात्मकः सम्बन्धः<br>• रसस्वरूपम्<br>• गुणस्वरूपम्<br>• दोषस्वरूपम्<br>• प्रमातृप्रमेययोरभेदः | 1 | | 16+4 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | • श्रद्धाया माहात्म्यम् | | | |
| | | | 3. **पाश्चात्यविदुषां काव्यशास्त्रीयाः सिद्धान्ताः (क)**<br>• प्लेटो-सिद्धान्तः<br>• अरस्तू-सिद्धान्तः<br>• लांजाइंस-सिद्धान्तः<br>• हौरेस-सिद्धान्तः<br>• हीगेल-सिद्धान्तः<br>• शापेनहावर-सिद्धान्तः | 1 | | 16+4 |
| | | | 4. **पाश्चात्यविदुषां काव्यशास्त्रीयाः सिद्धान्ताः प्रमुखा वादाश्च (ख)**<br>• **पाश्चात्यविदुषां सिद्धान्ताः**<br>• सैमुअलडेनियल-सिद्धान्तः<br>• अलेक्जेण्डर-पोपसिद्धान्तः<br>• विलियमवर्डसवर्थ-सिद्धान्तः<br>• टि.एस.इलियट-सिद्धान्तः<br>• आई.ए.रिचर्डस-सिद्धान्तः<br>• प्रमुखा वादाः<br>• आदर्शवादः<br>• स्वच्छन्दतावादः<br>• प्रतीकवादः<br>• बिम्बवादः | 1 | | 16+4 |
| | | | उद्देश्यम्- आधुनिकभारतीयकाव्यशास्त्रपम्परायाः, रेवाप्रसादद्विवेदिनः पाश्चात्यविदुषां च काव्यसिद्धान्तस्य अवबोधनम्।<br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः -<br>1. आधुनिकभारतीयकाव्यशास्त्रस्य परम्परां पाठयितुं प्रभविष्यन्ति<br>2. रेवाप्रसादद्विवेदिनः काव्यसिद्धान्तं बोधयितुं समर्था भविष्यन्ति<br>3. पाश्चात्यं काव्यसिद्धान्तं प्रतिपादयितुं शक्ष्यन्ति<br>4. भारतीयया पाश्चात्यया च दृशा<br>साहित्यस्य पर्यालोचने शक्ता भविष्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थः- काव्यालंकारकारिका, रेवाप्रसादद्विवेदि<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988<br>2.काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967<br>3.संस्कृतवाङ्मय का बृहद् इतिहास (काव्यशास्त्रखण्ड), | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | बलदेवउपाध्याय, उत्तरप्रदेशसंस्कृतसंस्थान, लखनऊ<br>भारतीय 4.साहित्यशास्त्र कोश, डा.राजवंश सहाय हीरा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना 1988.<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (वैकल्पिकम्) | चतुर्थम् | DSCC-30 | पाण्डुलिपिविज्ञानम् | | 4 | 64+16 |
| | | | • **पाण्डुलिपिविज्ञानपरम्परा**<br>➢ पाण्डुलिपिपरिचयः<br>➢ लिपीनाम् इतिहासः<br>➢ पाण्डुलिपीनां वैविध्यम्<br>➢ पाण्डुलिपिसंग्रहणम्<br>➢ पाण्डुलिपिसंरक्षणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | • **पाण्डुलिपिप्रकाराः**<br>➢ ताडपत्राणि<br>➢ भूर्जपत्राणि<br>➢ ताम्रपत्राणि<br>➢ कर्गदपत्राणि<br>➢ पटलेखाः<br>➢ पाषाणलेखाः<br>➢ काष्ठफलकलेखाः<br>➢ मृत्तिकाफललेखाः | 1 | | 16+04 |
| | | | • **भारतीयलिपिविज्ञानम्**<br>➢ ब्राह्मीलिपिः<br>➢ शारदालिपिः<br>➢ ग्रन्थलिपिः<br>➢ खरोष्ठीलिपिः<br>➢ नन्दनागरीलिपिः<br>➢ तिरुताक्षरीलिपिः<br>➢ देवनागरीलिपिः<br>➢ तेलुगुलिपिः | 1 | | 16+04 |
| | | | • **पाण्डुलिपिसंरक्षणम्**<br>➢ तैलात् परिरक्षणम्<br>➢ जलात् परिरक्षणम्<br>➢ मूर्खहस्तात् परिरक्षणम्<br>➢ पिपीलिकाभ्यः परिरक्षणम्<br>➢ शिथिलबन्धनात् परिरक्षणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्-लिपीनां परिज्ञानम्।<br>**परिणाम:** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः ग्रन्थसम्पादने समर्थाः भविष्यन्ति।<br>पाठ्यग्रन्थः-1.शोधप्रविधिः पाण्डुलिपिविज्ञानं च-एन्. आर्. कण्णन्,<br>2. केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य शोधनीतिः www.sanskrit.nic.in Research Policy Document.<br>सहायकग्रन्थः-<br>2.अनुसन्धानस्य प्रविधि-प्रक्रिया- पी. एन्. शास्त्री,<br>3.संस्कृतशोधप्रविधिः-सत्यनारायण आचार्यः। | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः-**1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |


3. C. R. Kothari, Gaurav Garg, Research Methodolgy, (Methods & Techniques)
4. Manuscriptology: Shivaganesha Murthy R. S.; Sharada Publishing House, Delhi.
5. Katre, S. M. Introduction to Indian Textual Criticism.
6. Thakker, P.Jayant:Manuscriptology& Textual Criticism, Oriental Research Institute, Baroda, 2002
7. P. Chaddhah : Ethics in Comparative Research, 2018.
8. Kapoor, Kapil: Indian Knowledge Systems, Vol. 1&2, 2006.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (वैकल्पिकम्) | चतुर्थम् | DSCC-30 | शोधप्रविधिः | | 4 | 64+16 |
| | | | • अनुसन्धानपरम्परा | | | |
| | | | ➢ शोधप्रविधिपरिचयः<br>➢ शोधस्यावश्यकता<br>➢ शोधप्रकृतिः<br>➢ शोधप्रकाराः<br>➢ गवेषणयोग्यता | 1 | | 16+04 |
| | | | • शोधविषयनिर्वाचनम् | | | |
| | | | ➢ प्रास्ताविकं शोधकार्यम्<br>➢ शोधतत्त्वसङ्ग्रहः<br>➢ क्षेत्रकार्यसम्पादनम्<br>➢ शोधपत्रिकाव्यवहारः<br>➢ पादटीकासंख्यानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | • मातृकाप्रस्तुतिः | | | |
| | | | ➢ आवृत्तमुद्रणम्<br>➢ सूक्ष्मचित्रणम्<br>➢ मातृकाणां वैशिष्ट्यम्<br>➢ भाषान्तरीकरणम्<br>➢ भाषान्तरीकरणस्य प्रकाराः | 1 | | 16+04 |
| | | | • अनुसन्धानस्य विविधाः पद्धतयः | | | |
| | | | ➢ साहित्यिकपद्धतिः<br>➢ वैज्ञानिकी पद्धतिः<br>➢ विश्लेषणवर्गीकरणम्<br>➢ निष्कर्षः निर्णयश्च<br>➢ पाठचयनम्<br>➢ पाठसंशोधनम्<br>➢ अनुसन्धानस्य समस्याः<br>➢ शोधसम्भावनाः<br>➢ शोधफलम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- अनुसन्धानार्थं सामार्थ्यप्रदानम्।<br>**परिणामः**:- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः- अनुसन्धानं कर्तुं सामार्थ्याः भविष्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः** – अनुसन्धानस्य प्रविधि-प्रक्रिया- पी. एन्. शास्त्री,<br>**सहायकग्रन्थः**:- संस्कृतशोधप्रविधिः-सत्यनारायण आचार्यः।<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**:-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |


1. काणे. पी. वी. संस्कृतरचना
2. केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य शोधनीतिः www.sanskrit.nic.inResearch Policy Document.
3. C. R. Kothari, Gaurav Garg, Research Methodolgy, (Methods & Techniques)
4. Manuscriptology: Shivaganesha Murthy R. S.; Sharada Publishing House, Delhi.
5. Katre, S. M. Introduction to Indian Textual Criticism.
6. Thakker, P.Jayant:Manuscriptology& Textual Criticism, Oriental Research Institute, Baroda, 2002
7. P. Chaddhah : Ethics in Comparative Research, 2018.
8. Kapoor, Kapil: Indian Knowledge Systems, Vol. 1&2, 2006.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2<br>( नाट्यवर्गः) | तृतीयम् | DSCC-24 | भारतीयनाट्यपरम्परा | | 4 | |
| | | | १. **नाट्यशास्त्रोत्पत्तिः**<br>• नाट्यशास्त्रकर्तुः परिचयः<br>• मुनीनां प्रश्नः नाट्योत्पत्तिश्च<br>• नाट्यग्रहणार्थं पुत्रशतोत्पत्तिः<br>• कैशिकीवृत्तिप्रयोगाय अप्सरसः | 1 | | 16+ 4 |
| | | | २. **नाट्यस्य प्रथमप्रयोगः**<br>• नान्दीप्रयोगः नाट्योपकरणप्रदानञ्च<br>• नाट्यप्रयोगः विघ्नोत्पत्तिश्च<br>• जर्जरमहत्त्वं नाट्यमण्डपरक्षणञ्च<br>• नाट्यप्रयोजनं नाट्यपूजा च | 1 | | 16+ 4 |
| | | | ३. **नाट्यमण्डपनिर्माणविधिः**<br>• नाट्यगृहस्य परिमाणम्<br>• मध्यमनाट्यगृहस्य प्राशस्त्यम्<br>• मनुष्याणां कृते उद्दिष्टस्य नाट्यमण्डपस्य निर्माणविधिः<br>• नाट्यभूमिपूजनम् | 1 | | 16+ 4 |
| | | | ४. **रङ्गमञ्चनिर्माणविधिः**<br>• नेपथ्यगृहनिर्माणम्<br>• नाट्यमण्डपे स्तम्भस्थापनम्<br>• स्तम्भोत्थापने दोषाः<br>• मत्तवारणी, रङ्गशीर्षम्, रङ्गपीठम् | 1 | | 16+ 4 |
| | | | **उद्देश्यम्**- भारतीयनाट्यपरम्परापरिज्ञापनम्।<br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.नाट्यमण्डपस्य निर्माणभूमिः, 2.नेपथ्यम्, 3.रङ्गशीर्षम्, 4.रङ्गपीठम्, 5.मत्तवारणी एतेषां परिमाणम् इत्येतेषां ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br><br>पाठ्यग्रन्थः - भरतमुनिकृतं नाट्यशास्त्रम् -प्रथमद्वितीयाध्यायौ<br>**सहायकग्रन्थः** –<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**1-. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि ,2एकेन वाक्येन .<br>3 उत्तरलेखनम्. लघुत्तरीयप्रश्नाः4 ,. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य<br>मूल्याङ्कनं विधेयम् -1 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्.2 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्.<br>3 ,पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्.4लघुन.ाटकाभिनयः5 ,.<br>शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्6 ,.वाग्वर्धिनीसभायाम्<br>अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत**
**शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा**

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2 (नाट्यवर्गः) | तृतीयम् | DSCC-25 | आङ्गिकः अभिनयः | | 4 | |
| | | | **१. अभिनयः**<br>• अभिनयशब्दस्य निर्वचनम्<br>• अभिनयस्य भेदाः<br>• आङ्गिकाभिनयस्य त्रैविध्यम्<br>• षडङ्गः नाट्यसङ्ग्रहः<br>• त्रयोदशविधं शिरःकम्पनम् | 1 | | 16+4 |
| | | | **२. शिरःकम्पनं दृष्टिश्च**<br>• शिरःकम्पनविधिः, स्त्रीणां निहञ्चितशिरःकम्पनम्<br>• सप्तत्रिंशद् दृष्टिप्रकाराः<br>• दृष्टिप्रकाराणां लक्षणम्<br>• चिन्तादिव्यभिचारिभावेषु दृष्टिप्रकाराः<br>• रसाभिव्यञ्जने दृष्टिप्रकाराः अक्षितारका च | 1 | | 16+4 |
| | | | **३. नेत्राभिनयः**<br>• रसभावानुगुणम् अक्षितारकविधिः<br>• अवस्थानुगुणं भ्रुकुटिसञ्चारविधिः<br>• भ्रुकुटिचालनप्रयोजनम्<br>• नासिकायाः षड्विधावस्था<br>• नासिकाविनियोगप्रकारः | 1 | | 16+4 |
| | | | **४. गण्डोष्ठग्रीवानां सञ्चालनविधिः**<br>• गण्डस्य भेदाः अवस्थानुगुणं तत्सञ्चालनञ्च<br>• ओष्ठलक्षणम् तस्याभिनयश्च<br>• मुखरागाः तेषां प्रयोगाश्च<br>• ग्रीवा, अवस्थानुगुणं तत्कर्मविधानञ्च | 1 | | 16+4 |
| | | | **उद्देश्यम्**- आङ्गिकाभिनयस्य अवबोधनम्।<br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.रसानां भावानां प्रकाशने नाना अवस्थानुगुणं मुख-नेत्र-शिरः-गण्ड-ग्रीवानां सञ्चालनविधेः ज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः** - भरतमुनिकृतं नाट्यशास्त्रम् -अष्टमायायः<br>**सहायकग्रन्थः** –<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**1-. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि ,2एकेन वाक्येन . 3 उत्तरलेखनम्. लघुत्तरीयप्रश्नाः ,4दीर्घोत्तरप्रश्नाः। .<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम् -1 ,कार्यशालासु भागग्रहणम्.2 ,प्रदत्तकार्यलेखनम्. 3 ,पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्.4 ,लघुनाटकाभिनयः.5 . ,शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्6वाग्वर्धिनीसभायाम् . ।अधीतिविषयप्रस्तुतिः | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः2 (नाट्यवर्गः) | तृतीयम् | DSCC-26 | **शूद्रकस्य भट्टनारायणस्य च नाट्यसाहित्यम्** | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **नाटकपरम्परा**<br>• वेणीसंहारस्य परिचयः<br>• वेणीसंहारस्य इतिवृत्तम्<br>• वेणीसंहारस्य वैशिष्ट्यम्<br>• भट्टनारायणस्यरचनावैदग्ध्यम्<br>• भीमस्य कोपः<br>• युद्धघटनावर्णनम्<br>• मृत्युज्ञापनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **युद्धभूमिवर्णनम्**<br>• दुर्योधनवृत्तान्तः<br>• दुर्योधनस्य पितृसङ्गमः<br>• वेणीसंहरणम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **मृच्छकटिकस्येतिवृत्तम्**<br>• मृच्छकटिकस्य परिचयः<br>• मृच्छकटिकस्य वैशिष्ट्यम्<br>• शूद्रकस्य रचनावैदग्ध्यम्<br>• अलङ्कारन्यासः<br>• मृच्छकटिके नायकसङ्कल्पः<br>• द्यूतकरसंवाहकः<br>• सन्धिच्छेदः<br>• मदनिकाशर्विलकौ<br>• दुर्दिनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. **व्यवहारसंहारादिः**<br>• प्रवहणविपर्ययः<br>• आर्यकापहरणम्<br>• वसन्तसेनमोटनम्<br>• व्यवहारः<br>• संहारः<br>• मृच्छकटिकस्य नाटकसङ्कल्पः काव्यत्वं च | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्**- शूद्रकभट्टनारायणयोः नाट्यरचनारीतेः, तात्कालिकसामाजिकदशायाः, नाट्यशास्त्रीयतत्त्वानां च अवबोधनम्।<br>परिणामः:- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः:- 1. नाटकप्रयोगे प्रावीण्यं | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | प्राप्स्यन्ति। 2. युद्धस्य परिणामः दुःखमिति सत्यम् अवगमिष्यन्ति। 3. राजनीतिविज्ञानं प्राप्स्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः**--भट्टनारायणप्रणीतं वेणीसंहारम्, शूद्रप्रणीतं मृच्छकटिकम्।<br><br>**सहायकग्रन्थः-**<br><br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य.मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2<br>(नाट्यवर्गः) | चतुर्थम् | DSCC-27 | धनञ्जयसम्मतानि दशरूपकाणि | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **रूपकसाहित्यपरम्परा**<br>• संस्कृतरूपकाणाम् उत्पत्तिः विकासश्च<br>• प्राचीनरङ्गमञ्चः<br>• दशरूपकस्य परिचयः<br>• दशरूपकस्य वैशिष्ट्यम्<br>• धनञ्जयस्य नाट्यवैदग्ध्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **रूपकस्योद्देश्यपरिभाषादि**<br>• इतिवृत्तभेदाः<br>• पञ्च सन्धयः<br>• अर्थोपक्षेपकाः<br>• सर्वश्राव्यादयः<br>• आकाशभाषितवैशिष्ट्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **नायकलक्षणप्ररोचनादि**<br>• नायकभेदाः<br>• नायिकाभेदाः<br>• रसस्य काव्यार्थत्वम्<br>• कैशिक्यादिवृत्तयः<br>• निर्गमप्रकरणनाटिकाः<br>• भाणादि-ईहामृगान्तरूपकाणि | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. **रसभावादिप्रकरणम्**<br>• आलम्बनोद्दीपनादिः<br>• अनुभावसात्त्विकसञ्चारिभावाः<br>• रसास्वादलक्षणम्<br>• भक्त्यादीनां रसादौ अन्तर्भावः<br>• रूपकविषयोपसंहारः<br><br>उद्देश्यम्- दशरूपके प्रतिपादितानां दशानां रूपकाणां सलक्षणमवबोधनम्।<br>**परिणामः -**<br>1.रूपकसाहित्यपरम्परापरिज्ञानम्,<br>2.संस्कृतरूपकाणामुत्पत्तिविकासपरिज्ञानम्,<br>3.प्राचीनरङ्गमञ्चपरिज्ञानम्,रूपकस्योद्देश्यपरिभाषादिपरिज्ञानम्,<br>4.नायकलक्षणप्ररोचनादिपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>पाठ्यग्रन्थः--धनञ्जयविरचितं दशरूपकम्।<br><br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (नाट्यवर्गः) | चतुर्थम् | DSCC-28 | भासस्य भवभूतेश्च नाट्यरचनाकौशलम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **रूपकसाहित्यपरम्परा** | 1 | | 16+04 |
| | | | • संस्कृतरूपकाणाम् उत्पत्तिः विकासश्च<br>• प्राचीनरङ्गमञ्चः<br>• उत्तररामचरितस्य परिचयः<br>• उत्तररामचरितस्य वैशिष्ट्यम्<br>• भवभूतेः नाट्यवैदग्ध्यम्<br>• नाट्ये करुणरसस्य स्थानम् | | | |
| | | | 2. **चित्रदर्शनादिविषयः** | 1 | | 16+04 |
| | | | • चित्रदर्शनम्<br>• पञ्चवटीप्रवेशः<br>• छायायाः इतिवृत्तम्<br>• कौसल्याजनकयोगः<br>• कुमारविक्रमकथा<br>• कुमारप्रत्यभिज्ञानम्<br>• सम्मेलनम्<br>• करुणस्य हृदयसंवेदनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **भासरूपकसम्प्रदायः** | | | |
| | | | • स्वप्नवासवदत्तस्य परिचयः<br>• स्वप्नवासवदत्तस्य वैशिष्ट्यम्<br>• भासस्य नाटकरचनापाटवम्<br>• प्रथमाङ्कस्येतिवृत्तम्<br>• द्वितीयाङ्कस्येतिवृत्तम्<br>• तृतीयाङ्कस्येतिवृत्तम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. **उदयनविवाहादिप्रकरणम्** | | | |
| | | | • चतुर्थाङ्कस्येतिवृत्तम्<br>• पञ्चमाङ्कस्येतिवृत्तम्<br>• षष्ठाङ्कस्येतिवृत्तम्<br>• नाट्ये शृङ्गारस्य स्थानम्<br>• उत्तररामचरित-स्वप्नवासवदत्तयोः माहात्म्यम् | | | |
| | | | **उद्देश्यम्**- भासस्य भवभूतेश्च नाट्यरचनाकौशलस्य अवबोधनम्। | | | |
| | | | परिणामः- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं | | | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | छात्राः-<br>1.भवभूतेः नाट्यवैदग्ध्यपरिज्ञानम्, 2.नाट्ये करुणरसस्य स्थानम्परिज्ञानम्, 3.करुणस्य हृदयसंवेदनमपरिज्ञानम्, 4.भासरूपकसम्प्रदायपरिज्ञानम्, 5.नाट्ये शृङ्गारस्य स्थानपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**-धनञ्जयविरचितं दशरूपकम्।<br><br>**सहायकग्रन्थाः-**<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988.<br>4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | उत्तररामचरितम् | | | |

## राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2<br>(नाट्यवर्गः) | प्रथमम् | **DSCC-29** | धीरनैषधम् (रामावतारशर्मणः)<br>समग्रं नलचरितम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **रामावतारशर्मणः परिचयो नलेन राजहंसस्य मोक्षश्च (प्रथमाङ्कः)**<br>• नान्दी<br>• प्रस्तावना<br>• नलेन श्रुतशीलसंप्राप्तस्य दमयन्त्याश्चित्रस्य दर्शनम्<br>• नलस्योपवनविहारः<br>• राजहंसस्य ग्रहणम्<br>• राजहंसस्यमोक्षः | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **दमयन्ती-नलयोः पूर्वारागः कलेः दमयन्तीप्राप्तये संकल्पश्च (द्वितीय-तृतीयाङ्कौ)**<br>• प्रवेशकः<br>• विरहिण्या दमयन्त्याः शाण्डिल्यप्रेषितेन जलेनाभिषेकः<br>• दमयन्त्याः कमलां प्रति स्वप्नवृत्तान्तस्य कथननम्<br>• दमयन्त्या मूर्छा<br>• दमेन दमयन्त्या रक्षाविधिः<br>• भीमस्य विष्णुपूजनाय गमनम्<br>• इन्द्रस्य दमयन्तीं प्रत्युनुरागस्तद्विषादश्च<br>• दमयन्त्याः स्वमित्रे नलेनुरागं ज्ञातवत इन्द्रस्य प्रसादः<br>• गर्भाङ्कः<br>• कलिदुर्विलसितमिति गर्भाङ्केन सूचितो दमयन्तीप्राप्तये कलेः संकल्पः | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **दमयन्तीस्वयंवरे भागं ग्रहीतुं कुण्डिनपुरं प्रति प्रस्थितस्य नलस्य मध्येपथं लोकपालैः समागमो दमयन्त्या गौरीपूजनं च (चतुर्थ-पञ्चमाङ्कौ)**<br>• विष्कम्भकः<br>• तपस्विभिर्यागस्यारम्भः<br>• दमयन्त्या विप्रलम्भावस्थायाः चित्रस्य दर्शनेन नलस्य विरहातिशयः<br>• नलस्य समन्त्रकेण बाणेन तपस्विमखे | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | विघ्नविधायिनां रक्षसां वधः<br>• नलस्य पुनर्मदनबाधया मूर्छा<br>• लोकपालानामगमनम्<br>• नलरूपस्य मायाविनोसुरस्य तिरोधानम्<br>• लोकपालेष्वन्यतमस्य वरणाय संदिष्टाया अपि दमयन्त्या नलमेव वरीतुं संकल्पः<br>• दूत्यसमयेनुभूताया दमयन्त्या दशायाः स्मरणेन नलस्य विषादः<br>• दमयन्त्या गौर्याः पूजनं नलपारुष्येण तस्या मूर्छा नलस्पर्शेन चेतनाया अधिगमश्च<br>• स्वयंवरस्योद्घोषणा<br><br>4. **दमयन्त्या मानः, पुष्करेण राज्ये हृते दारकाभ्यां सहितया तया नलस्य पुनर्मेलनं च (षष्ठ-सप्तमाङ्कौ)**<br>• नलस्य दमयन्त्या विवाहेन विदूषकस्य मोदकप्रमोदः<br>• नलस्य गृहे स्वं कौमारदशायाश्चित्रं विलोकितवत्या नलस्य नायिकान्तरानुरागमनुमितवत्या दमयन्त्या मानः<br>• नलेन दमयन्त्याः प्रसादनम्<br>• नलस्य राज्ये दाहादय उत्पाताः<br>• गर्भाङ्कः<br>• पुष्करेण द्यूते नलस्य पराजयः<br>• पराजितस्य दमयन्तींपरित्यक्तवता कर्कोटकनाग-दंशविरूपेण नलेन ऋतुपर्णस्य सारथ्यम्<br>• विष्णोः सरस्वत्याश्च प्रसादेन नारदजलाभिषेकविगतवैरूप्यस्य नलस्य दारकाद्वयसहितया दमयन्त्या समागमः पुनः स्वराज्यस्य लाभश्च<br><br>**उद्देश्यम्**- रामावतारशर्मणः आधुनिकनाटकस्य धीरनैषधस्यावबोधनम्।<br>**परिणामाः**:- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः- 1. धीरनैषधकाव्यस्य सामान्यज्ञानं, 2.धीरनैषधकाव्यस्य काव्यात्मत्वज्ञानम्, 3. रसादीनां महत्त्वविज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**:- आनन्दवर्धनस्य ध्वन्यालोकः, 1, 2 उद्योतौ।<br>**सहायकग्रन्थाः**:-<br>1. काव्यात्ममीमांसा, डा.श्रीजयमन्तमिश्र, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2005.<br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा. ईश्वर चन्द्रशास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, 2007.<br>3. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, डा-सुशीलकुमार डे, श्रीमायाराम शर्मा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 1988. | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 4. भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त, डा-राजवंश सहाय हीरा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1967.<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (काव्य.) | तृतीयम् | DSCC-24 | शास्त्रकाव्यम् | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. शास्त्रकाव्यपरम्परा**<br>• शास्त्रकाव्यस्य परिचयः<br>• भट्टिकाव्यस्य वैशिष्ट्यम्<br>• भट्टिकवेः कवित्वम्,<br>• भट्टिकवेः शास्त्रवैदग्ध्यं शास्त्रप्रधानसाहित्यं च | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. भट्टिकाव्यम्- प्रथमः सर्गः**<br>• दशरथस्य दानशीलता<br>• नृपतेः वरस्वीकारः<br>• राज्ञो मधुपर्कपूजा<br>• सुतस्य गमनानुज्ञानम्<br>• पक्षिणां कूजनम्<br>(अभून्नृपो विबुधसखः -१.१ इति पद्यादारभ्य अथ जगदुरनीचैः -१.२७ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. भट्टिकाव्यम्- द्वितीयः सर्गः**<br>• स्थलपद्मानां हासः<br>• ताडकाहननम्<br>• रामस्य धनुर्भञ्जनम्, सीतापरिणयश्च<br>• जनकस्य दशरथं प्रति भाषणम् परशुरामपराजयः च<br>( वनस्पतीनां सरसां-२.१ इति पद्यादारभ्य अथ पुरुजवयोगान्-२.५५ इति पद्यपर्यन्तम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. भट्टिकाव्यम्- तृतीयः सर्गः**<br>• रामस्य वने प्रव्रजनम्<br>• भरतस्योत्कण्ठा<br>• वेदनादाकर्णनम्<br>• कुङ्कुमचन्दनानयनं रामभरतसंवादः च<br>(वधेन संख्ये पिशिताशनानां -३.१ इति पद्यादारभ्यइति निगदितवन्तं -३.५६ इति पद्यपर्यन्तम्)<br>**उद्देश्यम्-** भट्टिकाव्ये प्रयुक्तानां विशिष्टशब्दानां व्याकरणदृष्ट्या बोधनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.शास्त्रकाव्यपरम्पराज्ञानम्,<br>2.भट्टिकाव्यवैशिष्ट्यज्ञानम्,<br>3.शास्त्रप्रधानसाहित्यज्ञानम्, | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 4.रामायणकथापरिज्ञानम्,<br>5.राजादिधर्मशास्त्रपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**:- भट्टिविरचितं भट्टिकाव्यम्।<br>**सहायकग्रन्थः**:- 1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-2000.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**:-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (काव्य.) | तृतीयम् | DSCC-25 | चम्पूसाहित्यम् | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. चम्पूकाव्यपरम्परा**<br>• चम्पूकाव्यस्य परिचयः<br>• नलचम्पूकाव्यस्य वैशिष्ट्यम्<br>• त्रिविक्रमभट्टस्य कवित्वम्<br>• गद्यपद्यसाहित्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. चम्पूकाव्यप्रशंसादयः**<br>• सत्काव्यप्रशंसा<br>• खलनिन्दा, सज्जनप्रशंसा च<br>• वाल्मीक्यादिकविप्रशंसा<br>• कविवंशपरिचयः<br>• कविगतोद्देश्याः<br>• चम्पूकाव्यप्रशंसा<br>• आर्यावर्तवर्णनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. आर्यावर्तसौख्यादिवर्णनम्**<br>• निषधनगरीवर्णनम्<br>• नलवर्णनम्<br>• श्रुतशीलवर्णनम्<br>• नलस्य व्यावहारिकजीवनम्<br>• वर्षावर्णनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. आखेटादिवर्णनम्**<br>• नलस्याखेटवर्णनम्<br>• नलसमीपे दाक्षिणात्यस्यागमनम्<br>• कावेर्यादिनदीवर्णनम्<br>• पथिकस्य दमयन्तीदर्शनम्<br>• नलः दमयन्तीकथयाऽऽकृष्टः<br>• नलस्य कामाकुलत्वम्<br>उद्देश्यम्- चम्पूसाहित्ये नलचम्पूकाव्यस्य सौन्दर्यावबोधनम्।<br>**परिणामः**- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः- 1.चम्पूकाव्यपरम्पराज्ञानम्, 2.चम्पूकाव्यवैशिष्ट्यज्ञानम्, 3.पद्यगद्यसाहित्यज्ञानम्, 4.नलकथापरिज्ञानम्, 5.वर्णनासाहित्यपरिज्ञानम्, 5.अलङ्कारादिविषयपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>पाठ्यग्रन्थः- त्रिविक्रमभट्टविरचितानलचम्पूः-प्रथमः उच्छ्वासः<br>**सहायकग्रन्थः**- संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन,2007.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन | 1 | | 16+04 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत**
**शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा**

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट | क्रेडिट | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2<br>(Kavyavarg) | चतुर्थम् | DSCC-26 | **महाकाव्यम्- पुरातनं नवीनं च** | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. महाकाव्यपरम्परा**<br>• महाकाव्यानाम् उत्पत्तिः<br>• विकासश्च<br>• प्राचीनपद्यकाव्यरचना<br>• विक्रमाङ्कदेवचरितपरिचयः<br>• विक्रमाङ्कदेवचरितवैशिष्ट्यम्<br>• बिल्हणस्य कवित्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. काव्यगुणानुकीर्त्तनम्**<br>• मङ्गलाचरणम्<br>• साहित्यसमीक्षा<br>• कविगौरवम्<br>• दुर्जननिन्दा<br>• चालुक्यवंशोत्पत्तिः | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. भारतगौरवम्**<br>• दयानन्ददिग्विजयपरिचयः<br>• दयानन्ददिग्विजयवैशिष्ट्यम्<br>• मेधाव्रतस्य कवित्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. भारतदुर्दशाङ्कनम्**<br>• भारतस्य स्थितिः<br>• महर्षिबाललीलावर्णनम्<br>• राष्ट्रियतावलोकनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | उद्देश्यम्- बिल्हणसम्मतस्य काव्यसमीक्षणविधेः, मेधाव्रतसम्मतस्य भारतस्थितेश्च वर्णनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1.पद्यसाहित्यपरम्परापरिज्ञानम्,<br>2.संस्कृतमहाकाव्यानामुत्पत्तिविकासपरिज्ञानम्,<br>3.काव्यसौन्दर्यपरिज्ञानम्,<br>4.अलङ्कारादिपरिज्ञानम्,<br>5. ऐतिहासिकपरम्परायाः परिज्ञानम्,<br>6.राष्ट्रियतादिपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** 1.बिल्हणरचितं विक्रमाङ्कदेवचरितम्, (प्रथमः सर्गः)<br>2. मेधाव्रतरचितं दयानन्ददिग्विजयम्।<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-2000.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (Kavyavarg) | तृतीयम् | DSCC-27 | दशकुमाराणां जीवनवृत्तान्तः | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. कविकृतिपरिचयः विदर्भराजवर्णनं च<br>• दण्डिनः व्यक्तित्वं कृतित्वं च<br>• विदर्भराजवर्णनम्<br>• विश्रुतनाम्ना मन्त्रिपुत्रेण कृतः कूपात् वृद्धोद्धारः<br>• विदर्भदेशस्य राज्ञः पुष्पवर्मणः वर्णनम्<br>• मन्त्रिणा वसुरक्षितेन पुष्पवर्मपुत्रम् अनन्तवर्माणं प्रति कथिता राजोचिता नीतिः<br>• भृत्यस्य विहारभद्रस्य अनन्तवर्माणं प्रति दुरुपदेशप्रदानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. राजनीतौ अविलता<br>• चन्द्रपालितस्य महाराजम् अनन्तवर्माणं प्रति दुर्णयकथनम्<br>• राजपुरे स्वेच्छाचारिताप्रसारः<br>• स्त्रीणां चरित्रसंहारः<br>• अनन्तवर्मणो दुरवस्था | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. राज्यपतनम्<br>• अनन्तवर्मणो राज्याधिकारिणां पतनम्<br>• वसन्तभानुकृतम् अनन्तवर्मणः राज्यस्यायत्तीकरणम्<br>• वसुरक्षितस्य राज्यात् पलायनम्<br>• माहिष्मतीनगरे उत्सवायोजनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 4. अकार्यस्य फलं दुःखम्<br>• नालीजङ्घवृत्तान्तः<br>• प्रचण्डवर्मणः पतनम्<br>• अनन्तवर्मणा सह भानुवर्मणः युद्धम्<br>• अश्मकेशस्य कूटनीतिः, प्रभुशक्ति-मन्त्रशक्तिः-उत्साहशक्तीनां महत्त्वकथनम्<br><br>उद्देश्यम्- दण्डिनः दशकुमारचरितस्य च विषये अवबोधनम्।<br><br>परिणामः- अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः- | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1.गद्यसाहित्यपरिज्ञानम्,<br><br>2.राजनीतौ अविलतापरिज्ञानम्,<br>3.राज्यपतनविषयपरिज्ञानम्,<br><br>4.अकार्यस्य फलं दुःखमिति परिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br><br>**पाठ्यग्रन्थः-** दण्डिविरचितं दशकुमारचरितम् (उत्तरपीठिकायाम् अष्टमोच्छवासः), चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठानम्, वाराणसी, 1999।<br><br>**सहायकग्रन्थः-**<br><br>1. दण्डिविरचितं दशकुमारचरितम्, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठानम्, वाराणसी, 1999.<br><br>2. संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, पी.वी-काणे, डा.ईश्वरचन्द्रशास्त्री, मोतीलालबनारसीदास, दिल्ली, 2007.<br><br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिटक्रमः | क्रेडिटसंख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2 (काव्यवर्गः) | चतुर्थम् | DSCC-28 | थाइलेण्ड् देशे श्रीरामचरित्रम् | | 4 | 64+16 |
| | | | 1. **आधुनिकमहाकाव्यपरम्परा श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यं च**<br>• आधुनिकमहाकाव्यपरम्परा<br>• रामकीर्तिमहाकाव्यस्य तत्कर्तुः च परिचयः<br>• बैंकाकवर्णनम्<br>• अनोमतन्नुपाख्यानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 2. **सीता-रामजन्मवृत्तान्तः**<br>• रामजन्मोपाख्यानम्<br>• नन्दकोपाख्यानम् (रावणपूर्वजन्मवृत्तान्तः)<br>• सीताजन्मोपाख्यानम्<br>• सीताविवाहोपाख्यानम् | 1 | | 16+04 |
| | | | 3. **वनवासः**<br>• रामवनवासस्य जिह्वायाश्चोपाख्यानम्<br>• सीताहरण-जटायुवधोपाख्यानम्<br>4. **रामेण कृतः हनुमतः दर्शनम्**<br>• हनुमत्सम्पर्कोपाख्यानम्<br>• दरभ्यु(थोरप्पु) उपाख्यानम् (बालिवधलङ्कावधोपाख्यानम्) | 1 | | 16+04 |
| | | | **उद्देश्यम्:-** रामकीर्तिमाहाकाव्यस्य सम्यक् परिचयप्रदानम्<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनादनन्तरं छात्राः-<br>1.आधुनिकमहाकाव्यपरम्परां ज्ञास्यन्ति।<br>2. सत्यव्रतशास्त्रिणः काव्यरचनाकौशलं ज्ञास्यन्ति।<br>3.सीता-राम-हनूमदादीनां कविना कृतं चित्रणं ज्ञातुं शक्ष्यन्ते।<br>4.प्रकृतकाव्ये निरूपितं सीतारामचरितम् अवगमिष्यन्ति। | 1 | | 16+04 |
| | | | **पाठ्यग्रन्थः:-** श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्, (प्रथसर्गात् अष्टमसर्गपर्यन्तम्)प्रो. डा.सत्यव्रतशास्त्री, शिवालिक प्रकाशन, 4648/21, अन्सारि रोड, दर्या गंज, न्यू दिल्ली<br>**सहायकग्रन्थः:-**<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-221001<br>2. संकृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन वाराणसी, 2001 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | **परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्यः-2 (Kavyavarg) | चतुर्थम् | DSCC-29 | प्राचीनगद्यसाहित्यम् | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. गद्यकाव्यपरम्परा**<br>• गद्यकाव्यानाम् उत्पत्तिः<br>• विकासश्च<br>• प्राचीनगद्यकाव्यरचना<br>• वासवदत्ताग्रन्थपरिचयः<br>• वासवदत्ताग्रन्थवैशिष्ट्यम्<br>• कविसुबन्धोः कवित्वम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. विक्रमादित्यस्य महिमवर्णनम्**<br>• सरस्वतीवर्णनम्<br>• विक्रमादित्यकीर्त्तिः<br>• पङ्कजानां सार्वभौमयोगादिः<br>• कन्दर्पकेतुवर्णनम्<br>• कन्यादर्शनवर्णनम्<br>• कुसुमपुरनगरवर्णनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. भागीरथ्यादिवर्णनम्**<br>• वसन्तकालवर्णनम्<br>• राजतनयः चिन्तामणिः<br>• सन्ध्यावर्णनम्<br>• अन्धकारवर्णनम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. मत्तमातङ्गादिवर्णनम्**<br>• वियद्वर्णनम्<br>• चन्द्रवर्णनम्<br>• कामवर्णनम्<br>• कामचापवर्णनम्<br><br>**उद्देश्यम्-** विक्रमाङ्कदेवकालिकसामाजिकस्थितेः अवबोधनम्।<br>**परिणामः-** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>1. सुबन्धोः गद्यसाहित्यरचनाशैलीपरिज्ञानम्,<br>2. संस्कृतगद्यकाव्यानामुत्पत्तिविकासपरिज्ञानम्,<br>3. गद्यकाव्यसौन्दर्यपरिज्ञानम्,गद्येष्वलङ्कारदिदिपरिज्ञानम्,<br>4. गद्यसाहित्यपरिपाकादिपरिज्ञानम्,रसभावादिपरिज्ञानं च प्राप्स्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः-** सुबन्धुकविविरचिता वासवदत्ता<br>**सहायकग्रन्थः-**<br>1.संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001<br>2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>3.संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी-2000.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्**- अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली (CBCS) के अन्तर्गत
शास्त्री+आचार्य (पञ्चवर्षीय) पाठ्यक्रम के लिए निर्मित पाठ्यक्रम की रूप रेखा

| कक्षा | सत्रार्द्धम् | पत्रकूटाङ्कः | पाठ्यक्रमस्य विवरणम् | क्रेडिट क्रमः | क्रेडिट संख्या | होरा |
|---|---|---|---|---|---|---|
| आचार्य-2<br>(Kavyavarg) | चतुर्थम् | DSCC 29 | गीतिकाव्यपरम्परा | | 4 | 64+16 |
| | | | **1. गीतिकाव्यपरम्परायाः उद्गमः विकासश्च**<br>• भक्तिपरम्परा<br>• भक्तिपरकसाहित्यम्<br>• गङ्गानद्याः भौगोलिकं महत्त्वम्<br>• पण्डितराजः तद्रचिता गङ्गालहरी च | 1 | | 16+04 |
| | | | **2. अमङ्गलनाशिनी गङ्गा १- १३**<br>• गङ्गा सुधासौन्दर्यरूपिणी अविद्यानाशिनी सन्तापहारिणी च<br>• गङ्गा शरणागतरक्षिका, गङ्गाजलस्य महत्त्वम्, गङ्गाया अनुग्रहः<br>• गङ्गायाः नामजपस्य महिमा, भवदुःखहारिणी गङ्गा<br>• जननमरणदुःखहारिणी गङ्गा, विष्णुपदप्राप्तिः गङ्गाधरः शिवः, अनवरतं पापं हरन्ती गङ्गा | 1 | | 16+04 |
| | | | **3. अपारमहिमान्विता गङ्गा १४-२६**<br>• गङ्गा शिवस्य जटालङ्कृता, पापिनाम् उद्धारित्री, गङ्गाया अनिर्वचनीयः महिमा<br>• गङ्गायाः तीर्थान्तराद् वैशिष्ट्यम्, विशिष्टं वपुः, कृपायै प्रार्थना<br>• भवपाशमोचनाय प्रार्थना, पतिततारिणी गङ्गा, अनुपमा गङ्गा<br>• कामानां सवित्री अनाथरक्षिका च गङ्गा, कथायां गङ्गायाः सान्निध्यम् | 1 | | 16+04 |
| | | | **4. गङ्गायां प्रार्थना २७-५३**<br>• तापहरणाय प्रार्थना, भयनिवारणाय प्रार्थना<br>• दोषनिवारणाय प्रार्थना, मुक्तिदात्री गङ्गा<br>• गङ्गानुग्रहस्य अनुग्रहः, संसारनिवृत्तिः<br>• जगन्नाथस्य सम्द्धरणाय प्रार्थना, ताण्डवं नः पुनातु इति प्रार्थना<br>**उद्देश्यम्**- गङ्गायाः माहात्म्यस्य अवबोधनम्।<br>**परिणाम-:** अस्य पाठ्यक्रमस्य अध्ययनात् अनन्तरं छात्राः-<br>.1 गीतिकाव्यसम्प्रदायं ज्ञास्यन्ति।<br>2. पापनाशिन्याः गङ्गायाः माहात्म्यं ज्ञास्यन्ति।।<br>3. भक्तिकाव्यसम्प्रदायं च ज्ञास्यन्ति।<br>**पाठ्यग्रन्थः**:- पण्डितराजजगन्नाथस्य गङ्गालहरी सम्पूर्णा<br>**सहायकग्रन्थः**:-1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, आचार्य बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी, 2001 | | | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2.संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा. ए.बी. कीथ, डा. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1967<br>3.संस्कृत साहित्य का इतिहास ,अकादमी चौखम्भा भारती उमाशंकर , वाराणसी- 2000.<br>**परीक्षामूल्याङ्कनपद्धतिः**-1. वैकल्पिकप्रश्नोत्तराणि, 2. एकेन वाक्येन उत्तरलेखनम् 3. लघुत्तरीयप्रश्नाः, 4. दीर्घोत्तरप्रश्नाः।<br>**आन्तरिकमूल्याङ्कनम्-** अधोलिखितेषु कानिचित् चत्वारि आश्रित्य मूल्याङ्कनं विधेयम्- 1.कार्यशालासु भागग्रहणम्, 2.प्रदत्तकार्यलेखनम्, 3.पाठ्यविषयाधारेण विडियोनिर्माणम्, 4.लघुनाटकाभिनयः, 5. शास्त्रसंजीवनीकार्यक्रमे भागग्रहणम्, 6.वाग्वर्धिनीसभायाम् अधीतिविषयप्रस्तुतिः। | | | |